धूप का टुकड़ा



राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

in the

धूप का टुकड़ा

अमृता प्रीतम

अनुवादक देविन्दर

मूल्य रु 30 00

प्रथम संस्करण 1966
द्वितीय संस्करण 1982

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
8 नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली-110002

मुद्रक रुचिका प्रिंटर्स द्वारा गौतम आर्ट प्रेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

आवरण इमरोज

DHOOP KA TUKARAA
Poems *by* Amrita Pritam

भूमिका

अमृता प्रीतम की कविताओं में रमना, हृदय में कसकती व्यथा का घाव लेकर, प्रेम और सौन्दर्य की धूपछाँह वीथी में विचरने के समान है, जहाँ वियोग तथा अतृप्ति के तीखे, नुकीले काँटे भावना के सुकुमार चरणों को प्रेम के चंचल निर्मम स्वभाव के कारण, क्षत विक्षत करते रहते हैं। ऐसी गहरी, दर्द में डूबी, प्राणिक संवेदनाओं के गीत कम ही देखने को मिलते हैं। यौवन की गोपन आकांक्षा धरती की रज पर उतरना चाहती है और उसका प्रत्येक कण, जाने नियति के किस विधान से, चिनगारी बनकर, अबोध हृदय में उगे प्रणय तिनकों के स्वप्न नीड को राख कर देता है। जिस प्रकार कोयल और चातक प्रेम के पक्षी हैं, उसी प्रकार अमृताजी भी मुखरित प्रणय तथा राग भावना की अन्यतम गायिका हैं जिन्हें ग्रीक कवयित्री सफो की तरह प्रबल अतृप्त यौवन-आवेग नये-नये प्रणय संवेदना में झकझोरता रहता है। वह प्रेम के वसन्त की दूत हैं और इस पृथ्वी पर जहाँ भी जाती हैं प्रेम की कभी न बुझनेवाली आग और सौन्दर्य की स्वप्न-स्पर्श लपटें बरसाती जाती हैं। भाव स्वप्नों की सूक्ष्म काया में उनकी कविता मानवीय प्रणय वेदना का दुःसह भार तथा जीवन यथार्थ की अदम्य पुकार सँभाले हुए युग कदम तथा कटु अनुभूतियों के कंकड पत्थरों पर चलते, ठोकर खाते, जैसे, सौन्दर्यचेतना में नये अधखुले क्षितिजों में मुक्त प्राण उड़ती हुई आगे बढ़ती रहती है। उनके छोटे-छोटे तीव्र संवेदना भरे चरण नावक के तीरों की तरह मर्म में गम्भीर घाव करते हैं। आज के कवि-समीक्षकों के शब्दों में उन्होंने छककर क्षण को भोगा एवं जीवन को जिया है और उसका अपरिहार्य व्यथा रस अपनी कविता की अंजुलि में भर भरकर पिया है। अमृताजी धरती के जीवन के गीत भी गाती हैं। वह युग संघर्ष के प्रति प्रबुद्ध होने के कारण प्रगतिशील भावधारा से प्रेरित हैं। किन्तु प्रेम के प्रति एकाग्र समर्पण ही उनकी जीवन साधना तथा आत्म विकास का एकान्त पथ है।

शिल्प की दृष्टि से अमृताजी आधुनिक कला-बोध की कवयित्री हैं। उनके बिम्ब तथा प्रतीक उनके अत्यन्त निजी तथा अत्यन्त मौलिक हैं। उनकी भाव प्रक्रिया इतनी काव्यमयी होती है कि उनकी छन्द मुक्त पंक्तियाँ भी पढ़ते ही कण्ठस्थ हो जाती हैं, जो गुण हिन्दी की नयी कविता से एकदम लुप्त होता जा रहा है। अमृताजी की बाह्य आकृति जितनी आकर्षक है अपने भीतर वह अपनी सूक्ष्म काव्य-काया में भी उतनी ही मनोरम है, ऐसा पक्षपात विधाता के यहाँ कम ही देखने को मिलता है।

उनकी कला-दृष्टि जिस वस्तु या दृश्य का भी स्पर्श करती है उसे गहरी काव्य-संवेदना की प्रक्रिया एवं उपकरणों में परिणत कर देती है। उनके लिए

संसार की समस्त वस्तुएं भावना के ढांचे में ढली हैं। वह आकाशीय व्यापारों को भी घरेलू वातावरण में बांधकर उन्हें हृदय के निकट ले आती हैं। धूप का छोटा सा टुकड़ा भी रहस्य से सोये हुए बच्चे की गरम सांस बनकर उसकी हथेली थाम लेता है। आज के बौद्धिक काव्य तथा अमूर्त रचना के युग में ऐसी मूर्तामूर्त भावना की शुद्ध कविता अन्यत्र देखने को नहीं मिलती है। प्रेम की तन्मय अनुभूति तथा सौंदर्य के पुलक स्पर्श से छूकर वे वर्तमान यन्त्र-युग के कुरूप उपादानों को भी काव्य की गरिमा तथा सम्मोहन प्रदान कर देती हैं। वैसे तो इस संग्रह की 75 प्रतिशत पंक्तियां उद्धृत करने योग्य हैं किन्तु मैं थोड़े से अवतरणों को यहां देकर अपने कथन का समर्थन करूंगा। स्मृति की प्रखर अनुभूति का एक चित्र है—

मैं दिल के कोने में बैठी हूं
तुम्हारी याद इस तरह आयी
जैसे गीली लकड़ी में से
गाढ़ा कड़ुवा धुआं उठे

कुछ कोयलों की तरह बिखरे हुए
कुछ बुझ गये कुछ बुझने से रह गये।

दैनन्दिन के सजीव गृहस्थी के व्यापारों के माध्यम से कैसी अकथनीय व्यथा की अभिव्यक्ति की गयी है। रोज़ी शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियां हैं—

चांद की चिमनी में से
सफेद गाढ़ा धुआं उठता है —
सपने जैसे कई भट्टियां हैं
हर भट्टी में आग झोंकता हुआ
मेरा इश्क मज़दूरी करता है।
तेरा मिलना ऐसा होता है
जैसे कोई हथेली पर
एक वक्त की रोज़ी रख दे।

युग के छोटे मोटे व्यापारों के भीतर से हृदय की कैसी टीस झलकती है। और भी देखिए—

रात कुड़ी ने दावत दी
सितारों के चावल फटक कर
यह देग किसने चढ़ा दी।

कैसी घरेलू तथा साथ ही कैसी नवीन और मौलिक कल्पना है। इसी प्रकार के हल्के फुलके शब्दों में इस प्रणय व्यथा की चितेरी ने अनेक हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किये हैं—

चांद ने रात के बालों में
जैसे फूल टांक दिया।

नींद के होठों से जैसे
सपने की महक आती है।

आज तारो ने फिर कहा
उम्र के महल मे अब भी
हुस्न के दीये जल रहे है
तू नही आया !

अथवा

जिसने अँधेरे के अलावा कभी कुछ नही बुना
वह मुहब्बत आज किरनें बुनकर दे गयी ।

ऐसी अनेक कवित्वमयी ममस्पर्शिनी पक्तिया इन कविताओं मे बिखरी पड़ी हैं जो या तो प्रेम व्यथा मे कराहती है या भाव सौदय से रोमाचित सी लगती हैं। कवयित्री के ही शब्दो मे—

उम्र के कागज़ पर
तेरे इश्क ने अँगूठा लगाया
हिसाब कौन चुकायेगा

अमृताजी की यथाथ-बोध से प्रेरित कविताएँ भी उनकी प्रणय गीतियो की तरह ही सशक्त तथा हृदय को छूनेवाली होती हैं—

लाश को एक लाश की भूख होती है
लाश की कोख बाझ नही होती !
और मेरी लाश की छाती से
दूध की एक बूद टपक पडती है।

अथवा

दुनिया की रोशनी से
सदिया शिकवा करती है
इस मुहब्बत के मौसम मे
तुमने नफरत को कैसे बो दिया।

अथवा

अन्नदाता।
मेरी ज़बान और इन्कार ?
यह कैसे हो सकता है
हा, प्यार
यह तेरे मतलब की शै नही।

अथवा

अब मैं शायद सारी उम्र
जिस्मो के कीचड म हाथ डाल
ढूढूगा इसी इश्क को
वर्जित-अवर्जित महक को
ढूढूगा इसी गध को।

अथवा

अस्पताल के दरवाज़े पर
हक सच, ईमान और कदरें
जाने कितने ही लफ्ज़ बीमार पडे हैं।

युग जीवन के यथार्थ का इससे सच्चा तथा ममव्यथापूण चित्रण और क्या हो सकता है ! वास्तव म अमताजी की कविता के लिए भूमिका की आवश्यकता नही है। उनके काव्य चरण अनेक भावनाआ तथा यथाथ की भूमिकाएँ पार करते हुए अपनी ही अनुभूतिजनित अतिशयता, आवेग तथा गहराई म हृदय मे स्वत अकित हो जाते है। वह कहती हैं—

मेरे इश्क के जख्म
तरी याद ने सिय थे
आज मैंने टाके खोलकर
वह धागा तुझे लौटा दिया
मेरे इश्क की पाक किताब
कितनी ददनाक है,
आज मैंने इतजार का सफा
इसमे फाड लिया।

प्रेम व्यथा की इतनी खुली, मार्मिक तथा सरल अभिव्यक्ति है कि अमृताजी से उन्ही के शब्दो मे पूछने को जी करता है कि—

अप्सरा ओ अप्सरा,
हुस्न कैसा खेल है
कि इश्क जीत नही पाता !

इसम सन्देह नही कि अमताजी की कविता के अनुवाद स हिन्दी काव्य भाव धनी, स्वप्न समृद्ध तथा शिल्प समद्ध बनेगा। इसम आये हुए पजाबी के अनेक सरल काव्यमय शब्द हिन्दी के शब्दचित्र भण्डार की पूर्ति करेंगे। निस्सन्देह इस हिन्दी अनुवाद स उनकी मौलिक पजाबी भाषा की कृति मे कही अधिक मिठास है। इन कविताओ मे यह सहज ही प्रमाणित हो जाता है कि अमताजी का स्थान पजाबी ही मे नही समस्त भारतीय भाषाओ म भी प्रथम श्रेणी के योग्य है। इस सग्रह स हिन्दी के नये कवियो को विशेष रूप से प्रेरणा मिलेगी जो आज अपने हृदय की सहज भाव ग्राहिणी अमूल्य दष्टि को गँवाकर कोरी बौद्धिकता के नीरस नि सार मरु म दिग्भ्रान्त भटक रहे हैं। जिस गहरी भाव-सवेदना, सामाजिक यथाथ तथा युगमानव की व्यथा का सच्चा चित्रण अमताजी ने अपनी नारी हृदय की जादू तूली से इन कविताओ म किया है वे उनकी कृति को एक अत्यन्त उच्च तथा व्यापक स्तर पर उठा देती है। मैं इन कविताओ के आमुख के रूप मे दो शब्द लिखकर चरितार्थता का अनुभव करता हू।

इलाहाबाद
11 5 66

सुमित्रानन्दन पन्त

क्रम

खण्ड—1

धूप का टुकड़ा	15
याद	17
रोज़ी	19
मैं	21
मुलाकात	23
दावत	23
आवाज़	25
तू नहीं आया	27
बातें	29
जाड़ा	31
सवेरा	33
आग की बात	35
निवाला	37
नागमणि	39
कम्पन	41
दावत	43
कुफ़्र	43
एक मुकाम	45
रोशनी	45
एक बात	47
खुशी	49
साल मुबारक	51
माया	53

खण्ड—2

हादसा	61
दूध की बूंद	61
रात मेरी	63
परदेसी	69
दाग	69
अन्नदाता	71
एक गुनाहगार	75
इडीपस	77
लँगड़ाता साया	79
एक नगर	81
एक शहर	85
तीसरी क़सम	91

खण्ड—3

वारिस शाह से	97
मजबूर	101
गंध	103
27 मई, 1964	107
रोशनी की सुई	109
एक गीत	111
शतरंज	115
दोस्तो !	119
एक खत	121

फेर तैनू याद कीता
अग्ग नू घुम्मिआ असां
इक्क पियाला ज़हर दा
इक घुट्ट फिर मंगिआ असां

धुप्प दा टोटा

मैनू उह वेला याद ए
जद इक टोटा धुप्प दा
सूरज दी उंगल पकड के
'हेरे दा मेला वेखदा
भीडा दे विच्च गुआचिआ

सोचदी हा—सहिम दा ते—
सुज दा वी साक हुदा ए
मैं जु इसदी कुछ नही
पर इस गुआचे बाल ने
इक हत्थ मेरा फड लिआ

पू किते लभदा नही
हत्थ नू छोहदा पिआ
निक्का ते तत्ता इक साह
ना हत्थ दे नाल परचदा
ना हत्थ दा खादा वसाह

'हेरा किते मुकदा नही
मेले दे रौले विच्च वी
है इक आलम चुप्प दा
ते याद तेरी इस तरहा
जिओं इक टोटा धुप्प दा

धूप का टुकडा

मुझे वह समय याद है
जब धूप का एक टुकडा
सूरज की उँगली थामकर
अँधेरे का मेला देखता
उस भीड म खो गया

सोचती हूँ   सहम का
और सूनेपन का एक नाता है
मैं इसकी कुछ नही लगती
पर इस खोये बच्चे ने
मेरा हाथ थाम लिया

तुम कही नही मिलते
हाथ को छू रहा है—
एक नन्हा सा गम सांस
न हाथ से बहलता है,
न हाथ को छोडता है

अँधेरे का कोई पार नही
मेले के शोर म भी
एक खामोशी का आलम है
और तुम्हारी याद इस तरह
जैसे धूप का एक टुकडा

याद

सूरज ने कुझ घावर के अज
चानण दी इक बारी खोहली
बद्दल दी इक बारी भीडी
उतर गिआ हेरे दी पौडी

अंबर दे भरवट्टिआ उत्ते
पता नही क्या मुढका आइआ
तारे, सारे बीडे खोहले
गला चन्न दा कुडता साहिआ

बैठी हा मैं दिल दी गुटठे
याद तेरी अज ईकण आई
जीकण गिल्ली लक्कड विच्चा
गाढा चौडा धूआ उटठे

नाल सक्के सोचा आईआं,
जीकण सुक्की लक्कड भरदी
लाल किरमची अग्ग दे हुडके
दोवें लक्कडा हुणे बुझाईआ

वरहे, जिसतरां कोले खिडे
कुझ बुज्झें, कुझ बुज्झणो रह गए
हत्थ समे दा साभण लग्गा
पोट्या उत्ते छाले पै गए

न्दल तेरे दे हत्था छुट्टी
जिंद वाहडनी टुट्ट गई है
तवारीख अज चौंके विच्चो
भुक्खी भाणी उट्ठ गई है

याद

आज सूरज ने कुछ घबरा कर
रौशनी की एक खिडकी खोली
बादल की एक खिडकी बन्द की
और अँधेरे की सीढियाँ उतर गया

आसमान की भवो पर
जाने क्या पसीना आ गया
सितारो के बटन खोलकर
उसने चाँद का कुर्ता उतार दिया

मैं दिल के एक कोने म बैठी हूँ
तुम्हारी याद इस तरह आयी
जैसे गीली लकडी मे से
गाढा कडुवा धुआ उठे

साथ हजारो खयाल आये
जैसे सूखी लकडी
सुर्ख आग की आह भरे
दोनो लकडियाँ अभी बुझायी हैं

वर्ष कोयलो की तरह बिखरे हुए
कुछ बुझ गये, कुछ बुझने से रह गये
वक्त का हाथ जब समेटने लगा
पोरो पर छाले पड गये

तेरे इश्क के हाथ से छूट गयी
और जिन्दगी की हँडिया टूट गयी
इतिहास का मेहमान
चौके से भूखा उठ गया

रोजी

नीले अंबर दी इक गुटठे

रात मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विच्चो
चिट्टा गाढा धूआं उटठे

सुपने जीवण वई भट्ठीआं
हर इक भट्ठी अग्ग झावदा
मेरा इश्क मजूरी करदा

मेल तेरा बुझ ईंधण मिलदा
जीवण कोई तलीआं उत्ते
इक डग दी रोडी धरदा

जिहडी सवखणी हाडी भरदा
रिन्ह पका के अन्न परस के
उहीओ हाडी मूधी धरदा

रहिंदी अग्ग 'ते हत्थ सेकदा
घडीए मासे निस्सल हुंदा
शुकर शुकर अल्ला दा करदा

रात मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विच्चा
धूआं निकले इसे आस ते

जोई कमाणा सोई खाणा
ना कोई किणका कल दा बचिया
ना कोई भोरा भलक वासते

रोजी

नीले आसमान के कोने मे

रात मिल का साइरन बोलता है
चांद की चिमनी मे से
सफेद गाढा धुआं उठता है

सपन जैसे कई भट्ठियां हैं
हर भट्ठी म आग झोकता हुआ
मेरा इश्क मजदूरी करता है

तेरा मिलना ऐसे होता है
जैसे कोई हथेली पर
एक वक्त की रोजी रख दे

जो खाली हँडिया भरती है
रांध-पका कर अन्न परस कर
वही हाडी उलटी रखता है

बची आंच पर हाथ सेंकता है
घडी पहर को सुस्ता लेता है
और खुदा का शुक्र मनाता है

रात मिल का साइरन बोलता है
चाद की चिमनी मे से
धुआं इस उम्मीद पर निकलता है

जो कमाना है वही खाना है
न कोई टुकडा कल का बचा है
न कोई टुकडा कल के लिए है

मैं

अबर जदो वी रात दा
ते चानण दा रिशता गढदे
तारे बधाईआ वडदे
क्यो सोचदी हां मैं जे कदी
मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

जिस रात दे होठा ने कदे
सुपने दा मत्था चुम्मिआ
सोचा दे पैरी छणकदी
इक झाजर जही उस रात दी

इक बिजली जदो असमान 'त
बद्दला दे वरके फोलदी
मेरी कहाणी भटकदी
आद ढूडदी, अन्त ढूडदी

है खडक पदी कोई तेर
दिल दी इक बारी जदो
मैं सोचदी हां केहो जही
जुरअत है मेर सवाल दी!

तलीआं दे उत्ते इश्क दी
मेंहदी दा कुझ दावा नही
हिजर दा इक रग है
ते इक खुशबू है तेरे जिकर दी

मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

मैं

आसमान जब भी रात का
और रौशनी का रिश्ता जोडते हैं
सितारे मुबारकबाद देते हैं
मैं सोचती हूँ, अगर कही
मैं, जो तेरी कुछ नही लगती

जिस रात के हाठो ने कभी
सपने का माथा चूमा था
सोच के पैरो मे उस रात से
इक पायल सी बज रही है

इक बिजली जब आसमान मे
बादलो के वर्क उलटती है
मेरी कहानी भटकती है
आदि ढूढती है, अन्त ढूँढती है

तेरे दिल की एक खिडकी
जब कही बज उठती है
सोचती हूँ, मेरे सवाल की
यह कैसी जुर्रत है !

हथेलियो पर इश्क की
मेहदी का कोई दावा नही
हिज्र का एक रग है
और तेरे जिक्र की एक खुशबू

मैं, जो तेरी कुछ नही लगती

मुलाकात

मेरा शहर जदो तू छोहिआ
अंबर आखे मुद्दा भर वे
अज मैं तारे वारा

दिल दे पत्तण मेला जुडिआ
राता जिआ रेशम दीआ परीआं
आईआं बाह् क्तारा

तेरा गीत जदा मैं छोहिआ
कागज उत्ते उँघड आईआ
केसर दीआ लकीरा

सूरज ने अज महदी घोली
तलीआ उत्ते रँगीआ गईआ
अज दोवें तकदीरा

दावत

रात कुडी ने दावत दित्ती,
तारे जीकण चौल छडीदे
किसने देगा चाढीआ

किसने आदी चन्न सुराही
चातण घुट्ट शराब दा
ते अंबर अक्खां गाढीआ

धरती दा अज दिल पिआ धडके
मैं सुणिआ अज टाहणा द घर
फुल्ल प्राहुणे आए वे

मुलाकात

मेरे शहर ने जब तेरे कदम छुए
सितारों की मुट्ठियाँ भरकर
आसमान ने निछावर कर दी

दिल के घाट पर मेला जुड़ा
ज्यों रातें रेशम की परियाँ
पाँत बाँधकर आयी

जब मैं तेरा गीत लिखने लगी
कागज़ के ऊपर उभर आयी
केसर की लकीरें

सूरज ने आज मेंहदी घोली,
हथेलियों पर रँग गयी
हमारी दोनों तकदीरें

दावत

रात-कुड़ी ने दावत दी
सितारों के चावल फटक कर
यह देग किसने चढ़ा दी

चाँद की सुराही कौन लाया
चाँदनी की शराब पीकर
आकाश की आँखें गहरा गयीं

धरती का दिल धड़क रहा है
सुना है आज टहनियों के घर
फूल मेहमान हुए हैं

इस दे अमा की सुहा लिगिआ
हुण एहां तकदीरां कोला
केहड़ा पुच्छण जाए ब

उमरा दे इस कागज उत्ते
इक तेरे अंगूठा लाइआ
कौण हिसाब चुकाएगा

किसमत ने इक नगमा लिखिआ
कहिंदे न कोई अज रात नूं
ओहीओ नगमा गाएगा

कलप बृछ दी छाँवें बहि के
कामधेन दा दुध पसमिआ
किसने भरीआ दोहणीआ

किहड़ा सुणे हवा दे हउके
चल नी जिन्दे चलीए—सानूं
सदृण आईआ होणीआ

आवाज

वरिहा दे पडे चीर के
तेरी आवाज आई है
ससी दे पैरा नू जिवें
किसे ने मरहम लाई है

अज किसे दे मोढिआ ते
इक हुमा लघिआ जिवें
चन्न ने अज रात दे
वाला च फुल्ल टुंगिआ जिवें

आगे क्या लिखा है
अब इन तकदीरों से
कौन पूछने जाये

उम्र के कागज पर
तेरे इश्क ने अँगूठा लगाया
हिसाब कौन चुकाएगा !

किसमत ने इक नगमा लिखा है
कहते हैं कोई आज रात
वही नगमा गायेगा

कल्प वृक्ष की छाँव में बैठकर
कामधेनु के छलके दूध से
किसने आज तक दोहनी भरी !

हवा की आहें कौन सुने,
चलूँ
तकदीर बुलाने आयी है

आवाज

बरसों की राहें चीरकर
तेरी आवाज आयी है
सस्सी के पैरों को जैसे
किसी ने मरहम लगायी है

आज किसी के सर से
जैसे हुमा गुजर गया
चाँद ने रात के बालों में
जैसे फूल टाँक दिया

नीदर दे होठा चो जिवें
सुपने दी महिक आउँदी है
पहिली विरन जिओ रात दे
मत्थे नू सगण लाउँदी है

हर इक हरफ दे बदन 'चा
तेरी महिक अउदी रही
मुहब्बत दे पहिले गीत दी
पहिली सतर गउँदी रही

हसरत दे धागे जोड के
सालू असी उणदे रहे
विरहा दी हिचकी विच्च वी
शहनाई नू सुणदे रहे

तू नहीं आया

चेतर ने पासा मोडिआ
रगा दे मेले वास्ते
फुल्ला ने रेशम जोडिया
तू नही आया

होईआ दुपहिरा लम्बीआ
शाखा नू लाली छोह गयी
दाती ने कणका चुम्मीआ
तू नही आया

बद्दला दी दुनीआ छा गयी
धरती ने बुक्का जोड के
अम्बर दी रहिमत पी लई
तू नही आया

नींद के होठों से जैसे
सपने की महक आती है
पहली किरण जैसे रात की
माँग मे सिन्दूर भरती है

हर इक हरफ के बदन से
तेरी महक आती रही
मुहब्बत के पहले गीत की
पहली सतर गाती रही

हसरत के धागे जोड़कर
हम ओढ़नी बुनते रहे
विरहा की हिचकी मे भी हम
शहनाई को सुनते रहे

तू नहीं आया

चैत ने करवट ली,
रंगों के मेले के लिए
फूलों ने रेशम बटोरा
तू नहीं आया

दोपहरें लम्बी हो गयीं
दाखों को लाली छू गयी
दराँती ने गेहूँ की बालियाँ चूम लीं
तू नहीं आया

बादलों की दुनिया छा गयी
धरती ने दोनों हाथ बढ़ाकर
आसमान की रहमत पी ली
तू नहीं आया

रुकखा ने जादू कर लिआ
जगल नू छोहदी पौण दे
होठा 'च शहद भर गिआ
तू नही आया

रता ने जादू छोहणीआ
चना ने पाईआ आण वे
राता दे मत्थे दौणीआ
तू नही आया

अज फेर तारे कह गये
उमरा दे महिली अजे वी
हुसना दे दीवे बल रहे
तू नही आया

किरणा दा झुरमट आखदा
राता दी गूढी नीद चो
हाले वी चानण जागदा
तू नही आया

गल्ला

आ सज्जण अज गल्ला करीए

तेरे दिल दे बागा अन्दर
हरी चाह दी पत्ती वागू
जिहडी गल्ल जदा वी उग्गी
उसे गल्ल नू तोड लिआ तू

हर इक कूली गल्ल छुपायी
हर इक पत्ती सुवक्णे पायी

मिट्टी दे इस चुल्हे अन्दर
किसे अग्ग नू फोल लवांगे
इक दो फूका मार लवांगे
बुज्झी लक्कड बाल लवांगे

मिट्टी दे इस चुल्हे अन्दर
सब इश्क दा बोल पवेगा
मेरे जिसम ताबीए अन्दर
दिल दा पाणी खौल पवेगा

आ सज्जण अज खोल्ह पोटली

हरी चाह दी पत्ती वागू
उहीओ तोड गवाईआ गल्ला
उहीओ साभ सुकाईआ गल्ला
इस पाणी विच पा के वेखी
इस दा रग वटा के वेखी

तत्ता घुट्ट इक तू वी पीवी
तत्ता घुट्ट इक मैं वी पीवा
उमर-हूनाला असा लघाइआ
उमर सिआला लघदा नहीऊँ

आ सज्जण अज गल्ला करीए

सिआल

जिन्द मेरी ठुरकदी
होठ नीले प गए
ते आतमा दे पैर वल्ला
कम्बणी चढदी पई

मिट्टी के इस चूल्हे में तो
हम कोई चिनगारी ढूँढ़ लेंगे
एक दो फूँकें मार लेंगे
सुलगी लकड़ी फिर से बाल लेंगे

मिट्टी के इस चूल्हे में
दरद की आँच बोल उठेगी
मेरे जिस्म की हँडिया में
दिल का पानी खौल उठेगा

आ साजन आज खोल पोटली

हरी चाय की पत्ती की तरह
वही तोड़-भँवाई बातें
वही गम्भान मुलायी बातें
इस पानी में डालकर देख
इसका रंग बदलकर देख

गर्म घूँट इक तुम भी पीना
गर्म घूँट इक मैं भी पी लूँ
उम्र का ग्रीष्म हमने बिता दिया
उम्र का शिशिर नहीं बीतता

आ साजन आज बातें कर लें

जाड़ा

मेरी जान ठिठुर रही है
होंठ नीले पड़ गये हैं
आत्मा के पैर की तरफ से
कपकँपी छूट रही है

थरिहा दे बद्दल गरजदे
इस उमर दे असमान ते
वेहड़े दे विच्च पैंदे पए
वानून गोहड़े बरफ दे

गलीआं दे चिक्कड लंघ के
जे अज तू आवें किते
मैं पैर तेरे धो दिआं

पुत्त तेरा सूरजी
कम्बल दी कन्नी चुक्क के
मैं हड्डां दा ठार भन्न लां

इक कोली धुप्प दी
मैं डीक ला के पी लवां
ते इक टोटा धुप्प दा
मैं कुक्ख दे विच पा लवां

ते फेर भोर उमर दा
इह सिआल गुज़र जाएगा

सवेर

ढाढी उच्ची कन्ध वक्त दी
बड़ी उचावी भीडी सौड़ी
रात जिवें लक्कड़ दी पौड़ी

लिपदे जादे गोल तिलक्के
हादसिआं दे सैआं डण्डे
जिस डण्डे ते पैर टिकादी
उस तो अगला धुट्ट के फड़दी
जिन्द-सवेर उताह नू चढदी

इस उमस के आकाश पर
बरसा के बादल गरज रहे हैं
कानून जैसे वज्र के मार
मेरे आँगन में गिर रहे हैं

कीचड़ भरी गलियाँ पार करके
जो तुम यहाँ आ जाओ
मैं तुम्हारे पैर धो दूँ

तुम्हारा सूरज का सा मुख
कम्बल का किनारा उठाकर
मैं हाथ-पाँव सेंक लूँ

एक कटोरा धूप का
मैं एक साँस में पी लूँ
और एक टुकड़ा धूप का
मैं अपनी कोख में रख लूँ

और इस तरह शायद
जन्म जन्म का जाड़ा बीत जाय

सवेरा

समय की दीवार बहुत ऊँची
लम्बी तंग और अँधियारी
रात जैसे काठ की सीढ़ी

लचकती गोल फिसलाई
हादसों की कई सीढ़ियाँ
जिस सीढ़ी पर पाँव टिकाती
उससे अगली सीढ़ी को थामती
एक सुबह ऊपर को चढ़ती

अबर आशक ऊंघी पायी
बैठा धुंद दा हुक्का पीवे
सूरज दा इक कोला लैवे
लीका पावे फेर बुझावे

फिर पूरब दी मंजी झाड़े
बद्दल वट्ट कडढ मे सारे
नीली चादर करे सदाहरी
गिणे गीटीआ बारो वारी

कदो किसे दा हत्थ छुटकिआ
कदो किसे दा पैर थिडकिया
गल्ल, जिसतरा मूहा गुंगी
गल्ल, जिसतरा कंनो बोली

पूरब दी अज मंजी खाली
कोई सवेर बहिण ना आयी
अम्बर बौरा ढूंड रिहा है
धरती दी हर सुन्दर जायी

अग्ग दी बात

अग्ग दी इह बात है
तूह इह बात पाई सी
ओही सिगरट जिन्द दी
जो तूं कदे सुलगाई सी

चिणग तेरी देण सी
इह दिल सदा धुखदा रिहा
वक्त मानो पवड मे
लेखा कोई लिखदा रिहा

अम्बर-आँगन ओपा बैठा
आज सुब्ह का दूसरा पाँव
सूरज का रथ जोतना मगर
सीखें सीस और बुलाव

फिर सूरज की भाट बाहरा
बादल जैसे कई करवटें
चाँदी चादर झाड़ बिछाना
और सुबह की राह देखना

हाथ किसी का बच रहा
पाँव किसी का पच फिसला
आज जिस तरह बिल्कुल सूनी
बात जिस तरह बिल्कुल सच्ची

सूरज का समिया खाली है
कोई सुबह आज नहीं आया
अम्बर घोड़ा ढूँढ रहा है
धरती की हर बस्ती गाई

आग की बात

यह आग की बात है
तूने यह बात सुनायी थी
यह ज़िन्दगी की वही सिगरेट है
जो तूने कभी सुलगायी थी

चिंगारी तूने दी थी
यह दिल सदा जलता रहा
वक़्त क़लम पकड़कर
कोई हिसाब लिखता रहा

चौदा कु मिन्ट छोए ने
आ वेख वहीआ इहनीआ
चौदा कु साल होए ने
आ वेख कलमा कहिंदीआ

एस मेरे जिसम अन्दर
साह तेरा चलदा रिहा
धरती गवाही दएगी
धूआँ निकलदा रिहा

जिन्द सिगरट बल गयी
महिक मेरे इश्क दी
कुझ तेरे साहा दे विच
कुझ पोण दे विच रल गयी

वेख टोटा आखरी
उँगला दे विच्चो छड्ड दे
सेक मेरे इश्क दा
पोटा ना तेरा छोह लव

जिन्द दा हुण गम नही
इस अग्ग नू सम्भाल लै
खैर मँगा हत्थ दी
हुण होर सिगरट बाल लै

बुरकी

जिन्द-कुड़ी ने कल्ह रात नू
सुपने दी इक बुरकी भन्नी
पता नही इह खबर किसतरा
पहुँच गयी अबर दे कन्नी

चौदह मिनट हुए हैं
इसका खाता देखो
चौदह साल हुए हैं
इस कलम से पूछो

मेरे इस जिस्म में
तेरा साँस चलता रहा
धरती गवाही देगी
धुआँ निकलता रहा

उम्र की सिगरेट जल गयी
मेरे इश्क की महक
कुछ तेरी साँसों में
कुछ हवा में मिल गयी

देखो यह आखिरी टुकड़ा है
उँगलियों में न छोड़ दो
कहीं मेरे इश्क की आँच
तुम्हारी उँगली को न छू ले

जिन्दगी का अब गम नहीं
इस आग को सँभाल ले
तेरे हाथ की खैर माँगती हूँ
अब और सिगरेट जला ले

निवाला

जिन्दगी ने कल रात
सपने का एक निवाला तोड़ा
जाने यह खबर किस तरह
आसमान के कानों तक जा पहुँची

वहुँआ खम्भा खबर सुणो
ते लम्बीआ चुञ्झा खबर सुणो
ते खुढिआ मूहा खबर सुणो
ते तिखिआ नहुँआं खबर सुणो

इस बुरकी दा नगा पिण्डा
इस खुशबू दा वज्जण पाटा
ना कोई मिलिआ मन दा ओहला
ना कोई तन दा झुन्यलमाटा

इक झपटटे बुरकी खुस्सी
दोवें हत्थ वलू घर धत्ते,
इक झपटटे गल्ह झरीटी
नहुँदर वज्जी मूह द उत्ते

मूह दे विच बुरकी दी थावें
रहि गईआ बुरकी दीआ गल्ला
अबर द विच उड्डण पईआ
राता जिवें कालीआ इल्ला

नाग मणी

डाढा घणा अकम्न दा जगल
इलम जिवें इक रुख चन्नण दा
मन दा सप्प कौडीआ वाला
मत्थे दे विच्च मणी चमक्दी
धौणा द विचच फण फैलाया

पोले पैर सपाधा आया
होठा उत्ते बीन इश्क दी
हत्थ आस दो बन्ही पच्छी
कच्चा दुँध मुहब्बत वाला
मन दा सप्प पटारी पाया

बड़े पत्तों ने यह खबर सुनी
नन्ही चोंचों ने यह खबर सुनी
तेज हवाओं ने यह खबर सुनी
तीखे नाखूनों ने यह खबर सुनी

रंग छिपाने का बदन मिला
खुशबू की ओढ़नी फटी हुई
मन की ओट कहाँ छिपी
तन की ओट कहाँ छिपी

एक झपट्टे में सितारा छिन गया
दोनों हाथ कम्पी हो गए
गालों पर खरोंचें आईं
होंठों पर नाखूनों के निशान

मुँह में मिठास की जगह
सितारे की चोटें रह गयी
और आसमान में रातें
काली चीलों की तरह उड़ने लगीं

नागमणि

गहरा घना अगर का जंगल
कुन्द खुला चन्दन का जैसे
मन का साँप कौड़ियोंवाला
माथे में एक मणि चमकती
और हवा में फन फैलाया

धीमे पाँव सपेरा आया
होठों पर एक बीन हृदय की
हाथ आग की बन्द पिटारी
कच्चा दूध मुहब्बतवाला
मन का साँप पिटारी पाया

बैठ सपैला इक चुराहे
बीन वजावे सप्प खिडाव
वदे सप्प नू गल विच पावे
हस्से राग अते विख रोवे
सारा लोक तमाशे आया

कम्वणी

धरती ने अज वरत खोल्हणा
दिल दी थाली कौण परोसे
गीता वाले चौल छडदिआ
कम्वण लग्गी उवखली

होणी ने अज रू विजाइआ
जिओ जिओ चरखा घूकर देवे
कबी जावे जिंद जुलाही
कबी जावे तक्कली

अम्बर दी अज पौडी कम्बे
तारे उतरण वाहो दाही
किहडे मन दे महला अदर
पई अचानक भउजली

किस पापी ने तीर चलाया
इश्क दा जगल सहम गिआ है
डरदी कम्बदी भज्ज गयी है
यादा दी मिरगावली

बैठ सपेरा एक चौराहे
बीन बजाय गाये गिनाय
सभी साँप को मन लगाये
डँसे राग और विष रोज
गाय सोर हमारे आगा

कम्पन

धरती आज बड़ डोलेगी
दिन की थाली में है परसूँ
सीता का यह पाय छूटो
काँप रही है ओगली

बिजली ने है दई दिखाई
क्या-क्यों पर्याँ गूँज सुनाय
काँप रही है प्राण जुलाहिन
काँप रही है तकसा

आज गगन की सीढ़ी काँप
तारे उतरें एक-एक कर
मन के भित महला म सहमा
मची हुई है गलबली

किस पापी ने तीर चलाया
इरख का जगल सहम गया है
डरते डरते भाग गयी है
यादों की मिरगावली

दावत

अकल इलम ने मिट्टी गोई
कलम मेरी घुमिआरी होई
गीत जिसतरा सागर कूजे
हुणे हुणे इस चॅक तो लाहे

दिल दी भट्ठी बालण पाया
दोहीं हत्थी उमर खरच के
कडढी असा शराब इशक दी
महिफल दे विच्च लैं के आये

सदीआ ने अज हउका भरिआ
किहा सराप दित्तोई सानू
जिंद कुडी अज विट्टर बैठी
किसे घुट्ट नू मूह ना लाये

इस दावत नू की कुझ कहीए
इश्क शराब इसतरा जापे
हर इक जाम दीआ अक्खा विच्च
जीकण गट गट अथरू आये

कुफर

अज असां इक दुनीआं वेची
ते इक दीन विहाज लिआये
गल्ल कुफर दी कीती

सुपने दा इक थान उणाया
गज कु कपड़ा पाड लिआ, ते
उमर दी चोली सीती

दावत

जब इश्क की माटी भीगी
कलम मेरी कुम्हारिन हुई
गीत जिस तरह गागर कूज़े
अभी-अभी चाक से आए

दिल की भट्ठी आग जलाई
दोनों हाथा उमर खप कर
एक शराब हज़ार आतशा
महफ़िल में हम लेकर आए

सदियों ने इल्ज़ाम लिया हर
कैसा साथ दिया है हमको
जीवन-प्याला रूठ गया है
एक घूँट न होंठ छुआये

इस दावत का क्या सदका दें
इश्क-शराब इस तरह मंगवी
हर इक जाम की बारी न हो
नैन छूट आँसू भर आए

कुफ़्र

आज हमने एक दुनिया बेची
और एक दीन ख़रीद लिया
हमने कुफ़्र की बात की

सपनों का एक थान बुना था
एक गज कपड़ा फाड़ लिया
और उम्र की चोली सी ली

अज असा अवर दे घडिओं
यह्ल दी इव चय्यणी लाही
घुट्ट चानणी पीती

गीता नाल चुवा जावागे
इह जु असां मौत दे कोला
घड़ी हुधारी लीती

इक मुकाम

कलम ने अज तोडिआ गीता दा काफीआ
इश्क मेरा पहुँचिया इह केहड़े मुकाम ते ।

वेख नज़रा वालिआ कि वहनी था साहमणे
तली विचा हिजर दी छिलतर नू कडद दे ।

जिस हनेरे तो सिवाये होर कुन ना कतिआ
उह मुहब्बत दे गयी किरणा अटेर के

उट्ठ आपणे घडे चो पाणी दा कौल देह
घो लवागी बैठ के राहवा दे हादस

रोशनी

हिजर दी इस रात विच्च
कुछ रोशनी औंदी पई
फेर बत्ती याद दी
कुछ होर उच्ची हो गई ।

आज हमने आसमान के घड़े से
बादल का ढक्कना उतारा
और एक घूंट चांदनी पी ली

यह जो एक घड़ी हमने
मौत से उधार ली है
गीतों से इसका दाम चुका देंगे

एक मुकाम

कलम ने आज गीतों का काफ़िया तोड़ दिया
मेरा इश्क यह किस मुकाम पर आ गया है

देख नज़रवाले, तेरे सामने बैठी हूँ
मेरे हाथ से हिज्र का कांटा निकाल दे

जिसने अँधेरे के अलावा कभी कुछ नहीं बुना,
वह मुहब्बत आज किरनें बुनकर दे गयी

उठो! अपने घड़े से पानी का एक कटोरा दो
राह के हादसे मैं इस पानी से धो लूंगी

रोशनी

हिज्र की इस रात में
कुछ रोशनी-सी आ रही है
शायद याद की बत्ती
कुछ और ऊँची हो गयी है

इक हादसा, इक जखम
ते इक चीस दिल दे कोल सी
रात नू इह तारिआ दी
रसम जरवां दे गयी

नजर दे असमान तो
है टुर गया सूरज किते
चन विच पर ओस दी
खुशबू अजे औंदी पई

रल गई सी एस विच
इक बूंद तेरे इश्क दी
इस लई मैं उमर दी
सारी कुड़ित्तण पी लई

इक गल्ल

सुच्चा दुद्ध मुहब्बत मेरी
चिट्टे चावल वरिह्आ वाले
माजी धोती दिल दी हाडी
दुनीआ जीवण गिल्ली लक्कड़
सारी वस्त ध्वाख गयी है

रात जिवें पित्तल दी कौली
चिट्टे चन दी कली लहि गई
अज कलपना कसर गई है
सुपना जीवण कसर जाए
नींदर जिवें कुड़ाहद गई है

एक हादसा, एक ज़ख्म
एक टीस दिल के पास थी
सितारों की रक़्म ने
रात को इसे ज़रब दे दी

नज़र के आसमान से
सूरज कहीं दूर चला गया
पर अब भी चाँद में
उसकी खुशबू आ रही है

तेरे दर्द की एक बूँद
इसमें मिल गयी थी
इसलिए मैंने उम्र की
सारी कड़वाहट पी ली

एक बात

सुच्चे दूध जैसी मेरी मुहब्बत
चिट्टे चावल बरसाके
माँजी धुली दिल की हाँडी
दुनिया जैसे गीली लकड़ी
सारी वस्तु धुआँस गई है

रात जैसे पीतल की कटोरी है
चाँद की सफ़ेद कलई उतर गयी
कल्पना पितरा गयी है
सपना कसरा गया है
और सारी नींद कड़वा गयी है

जिद-वुही दे अग मोक्ले
यादा जिवें सोटीआ छापा
उगला दे विच चीघा पईआ
समिआ दे मुनियारे मोला
रेती जिवें सडाच गई है

ठरदा जाए इश्क दा पिंडा
गीत दा झग्गा कीवण सीवां
उघड गया खिआल तरोपा
कलम-सूई दा नक्का टुट्टा
सारी गल्ल गुआच गयी है

खुशी

दूरा विधरा बाज सुणीवी
'बाज जिसतरा तेरी होवे
क ना ने इक हऊका भरिआ
कम्बण लग्गी जिन्द सिआणी

सुशा अजाणी हत्थ छुडा के
दोवें निक्कीआ बाहवा अडडी
ईवण दौडी, जीकण कोई
बालडी दौडे परो वाहणी

पहिला क डा सस्कार दा
दूजा क डा लाक लाज दा
तीजा क डा धन दौलत दा
खतरे जीवण कई छिलतरा

तलीआ विचो क डे कढदी
पोटे घुटदी लहू पूझदी

ज़िंदगी के हाथ में
यादें जैसे सोने की अँगूठी
उँगली में चीह्न पड़ गयी
समय के सुनार से
रेती जैसे खो गयी है

दर्द का बदन ठिठुर रहा है
गीत का कुरता कैसे सीऊँ
ख़यालों का धागा उलझ गया है
कलम की सुई टूट गयी है
और सारी बात खो गयी है

खुशी

दूर कहीं से आवाज़ आयी
आवाज़ ज़रा तेरी हो
काया ने गहरी साँस ली
जीवन-यात्रा काँप उठी

मासूम खुशी हाथ छुड़ाकर
दोनों नन्ही बाँहें फैलाकर
एक बालिका की तरह
नंगे पाँव भाग उठी

पहला काँटा संस्कार का
दूसरा काँटा लोक-लज्जा का
तीसरा काँटा धन दौलत का
खतरे जैसे कितने काँटे

तलवों से काँटे निकालती
पोर दबाती लहू पोंछती

मीला मीला पैर सगादी
अप्पड पहुँची सुखी निमाणी

अगला पैर अगाह नू जावे
पिछला पैर पिछाह नू आवे
'वाज जिसतरा असला तेरी
नजर जिसतरा बडी बेगानी

दोचित्ती दा तिखा कण्डा
अटही है विच ईवण सुझा
अक्ल इलम दा नहूँ हारिआ
सुझ गया है कित्था ताणी

गाग पैर सुज्जदा जावे
जहिर जिहा फैलदा जावे
हक्की यक्की मुज्ज बैठी
गोण लग्ग पई सुखी अज्जाणी

साल मुबारक !

जिवें सोच दी कंघो विच्चो
टुट्ट गया इक ददा
जिवें समझ द झग्गे उत्ते
लँग गयी इक सुघी
जिवें सिदक दी अख विच अज
चुभ गया इक तीला
नींदर ने जिआ उगला दे विच
सुपने दा इक कोला फडिआ
नवा साल अज ईकण चढिआ

मीलों चोगा चुगती हुई
मासूम घुग्गी यहाँ आ पहुँची

अगला पाँव आगे को बढ़े
पिछला पाँव पीछे को मुड़े
आवाज़ जैसे बिलकुल तेरी
नज़र जैसे बिलकुल बेगानी

असमंजस का तीखा काँटा
एड़ी में इस तरह चुभ गया
अक्ल इल्म के नाखून हार गए
जाने काँटा कहाँ तक उतर गया

सारा पाँव सूज गया है
ज़हर-सा फैल रहा है
हैरान परेशान ज़मीन पर बैठी
मासूम घुग्गी रो उठी है

साल मुबारक

जैसे सोच की कंघी में से
एक दंदा टूट गया
जैसे समझ के कुर्ते का
एक चीथड़ा उड़ गया
जैसे सिदक की आँखों में
एक तिनका चुभ गया
नींद ने जैसे अपने हाथों में
सपने का जलता कोयला पकड़ लिया
नया साल कुछ ऐसे आया

जीवण दिल दी पकिा विच्चा
बुझ गया इक अवसर
जिआ विनावाग दे कागज उत्ते
डुल्ह गई अज सिआही
जिवें सम दे होटा विचा
निकल गया इक हऊका
आदम जात दीआ आसा विच
जीवण कोई अथरु अडिआ
नवा साल अज ईकण चढ़िआ

जिवें इराक दी जीभ दे उत्ते
उठ पिआ इक छाला
गभिअता दीआ बाहवा विचा
भज्ज गयी इक चूडी
तवारीख दी मुदरी विच्चा
डिग्ग पिआ इक थेवा
धरती ते जिऊ अबर दा इक
वडा उदास जिहा खत पढिआ
नवा साल अज ईवण चढिआ

माया

प्रसिद्ध चित्तरकार विनसैंट वानगाग दी कलपित प्रमिका माया नू !

परीए नी परीए !
हूरा शाहजादीए !
गोरीए विनसैंट दीए !
सच किओ बणदी नही ?

हुसन काहदा ! इश्क काहदा !
तू क्ही अभिसारिका !

जैसे दिल के फ़िक़रे से
एक अक्षर बुझ गया
जैसे विश्वास के कागज़ पर
सियाही गिर गयी
जैसे समय के होंठों से
एक गहरी साँस निकल गयी
और आदमज़ात की आँखों में
जैसे एक आँसू भर आया
नया साल कुछ ऐसे आया

जैसे इश्क़ की ज़बान पर
एक छाला उठ आया
सभ्यता की बाँहों में से
एक चूड़ी टूट गई
इतिहास की अँगूठी में से
एक नीलम गिर गया
और जैसे धरती ने आसमान का
एक बड़ा उदास-सा ख़त पढ़ा
नया साल कुछ ऐसे आया

माया

प्रसिद्ध चित्रकार विंसेण्ट वानगाग की कल्पित प्रेमिका माया से ।

अप्सरा ओ अप्सरा !
शहज़ादी ओ शहज़ादी !
विंसेण्ट की गोरी !
तुम सच क्या नहीं बनती ?

यह कैसा हुस्न ! और कैसा इश्क़ !
और तू कैसी अभिसारिका !

अपणे किसे महिबूब दी
आवाज़ तू सुणदी नही

दिल द अन्दर चिणग पा के
साह् जदो लग्गा कोई
सुलगदे अंगिआर कितने
तू कदे गिणदी नही

काह्दा हुनर ! काह्दी कला !
तरना है इह इक जीऊण दा
सागर तखईअल दा कदे
तू कदे मिणदी नही

परीए नी परीए !
हूरा शाह्ज़ादीए !
खिआल तेरा पार ना—
उरवार देंदा है

रोज़ सूरज ढूंढदा है
मूह् किते दिसदा नही
मूह् तेरा जो रात नू
इकरार देंदा है

तड़प किसनू आख दे ने
तू नही इह जाणदी
क्यो किसे तो जिन्दगी
कोई वार देंदा है !

दोवें जहान आपणे
लादा है कोई खेड ते
हसदा है नामुराद
ते फिर हार देंदा है।

परीए नी परीए !
हूरा शाह्ज़ादीए !

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लक्खां ख़िआल इसतरां
औणगे टुर जाणगे

अरगवानी ज़ह्रि तेरा
रोज़ कोई पी लवेगा
नक्श तेरे रोज़ जादू
इसतरां कर जाणगे

हस्सेगी तेरी कलपना
तड़पेगा कोई रात भर
साला दे साल इसतरां
इसतरां खुर जाणगे

हुनर भुक्खा रोटी ए!
प्यार भुक्खा गोरी ए!
कितने कु तेरे वानगाण
इसतरां भर जाणगे!

परीए नी परीए!
हूरां शाहज़ादीए!
हुसन काह्दी शैह है
इश्क जद पुगदे नहीं

रात है काली बड़ी
उमरां किसे ने बालीआं
चन सूरज कहे दीवे
अजे वी जगदे नहीं

बुत्त तेरा सोहणीए!
ते इक सिट्टा कणक दा
काह्दीआं इह धरतीआं
अजे वी उगद नहीं

हुनर भुक्खा रोटीए!
प्यार भुक्खा गोरीए!
काह्दा है रुक्ख निज़ाम दा
फल कोई लगदे नहीं।

इस तरह लाखो खयाल
आयेंगे, चले जायेंगे

तेरा अरगवानी जहर
कोई रोज पी लेगा
और तेरे नक्श हर रोज
जादू कर जायेंगे

तेरी कल्पना हँसेगी
कोई रात-भर तड़पेगा
और बरस के बरस
इस तरह बीत जायेंगे

हुनर भूखा है ए रोटी !
प्यार भूखा है, ए गोरी !
तेरे कितने बानगाग
इस तरह मर जायेंगे !

अप्सरा ओ अप्सरा !
शहजादी ओ शहजादी !
हुस्न कैसा खेल है
कि इश्क जीत नही पाता

रात जाने कितनी काली है
उम्र को भी जला के देख लिया
चाँद सूरज कैसे चिराग हैं
कोई जल नही पाता

ए अप्सरा ! तुम्हारा बुत
और गेहूँ की एक बाली
यह कैसी धरतियाँ है
कुछ भी उग नही पाता

हुनर भूखा है, ए रोटी !
प्यार भूखा है, ए गोरी !
निजाम का पेड कैसा है
जैसे कोई फल नही लगता।

खण्ड—2



8954

हादसा

वरि्हा की इक भारी हुस्त
हादसिया दे तिगे ददे
अचणचेती पावा टुट्टा
अम्बर दी इस चौकी उत्ता
डिग पिआ दीवे दा सूरज
अपला विच्च क करा पईआ
नीझ मेरी अज जख़्मी होई
दुनीआ शाइद अजे वी वस्से
नीझ मेरी नू कुछ ना दिस्से

दुद्ध दी बून्द

मौत मेरी इक गल्ल चरोकी
कदी कदी मैं उट्ठा   सोचा
चल्ला—फुल प्रवाह आवा मैं
लाश दा क रज़ा लाह आवा मैं

हर घटना, समझा सकदी हा
इक घटना समझा नहीं सकदी

हादसा

सड़कों की भारी हुंग रही थी
पटाखा से गीत गुजीर से
अकस्मात एक धमाका हुआ
आसमान की चोटी पर से
[illegible] का गुम्बज गिर गया
आंखों में कंकड़ गिरा गए
और नज़र धुंधली हो गयी
कुछ दिखायी नहीं देता
दुनिया शायद अब भी बची होगी।

दूध की बूंद

मेरी माँ, एक पुरानी बात है
कभी-कभी डरती हूँ, सोचती हूँ
चाहूँ वहीं से फिर वापस आऊँ
माँ का कर्ज उतार आऊँ

हर [illegible] हूँ
पर [illegible] नहीं सकती

लाश नू ढूंदी मुक्ख लाश दी
बाश ना होवे कुक्ख लाश दी

हारे मुक्ख लाश दी हारे
मोई कुक्ख नू ममता मारे

लाश दा करजा लाह सकदी हा
कुक्ख दा करजा कौण उतारे

कदे कदे मैं उठ्ठा सोचा
कुक्ख दी लाल वही नू पाड़ा
अपणा दसखत आप छुपावा
इस करजे तो मुकर जावा

उठदी पैर दहलीजे रक्खदी
कुक्ख दी चोरी मारे मैंनू
लाश मेरी दी छाती विच्चा
सिम्म पवे इक बूंद दुद्ध दी

सरदल अपनी था तो हिल्ले
उसदी थावें पैर खलोवे
हझुआ नू कोई तर सकदा ए
दुद्ध दी बूंद पार ना होवे।

रात मेरी

रात मेरी जागदी
तेरा खयाल सौं गया

सूरज दा रक्ख खडा सी
किरना किसे ने तोडीआ

लाल का एक लाल की भूख होती है
लाश की कोख बाँझ नहीं होती

लाश की कोख हार जाती है
पर पूरी कोख को ममता मारती है

लाश का कर्ज उतार सकती हूँ
कोख का कर्ज कैसे उतारूँ?

कभी-कभी उठती हूँ, सोचती हूँ
कोख का वही खाता फाड़ दूँ
अपने दस्तखत आप ही छुपा लूँ
इस कर्ज से मुकर जाऊँ

उठती हूँ, दहलीज पर पाँव रखती हूँ
कोख की चोरी मुझे मारती है
और मेरी लाश की छाती से
दूध का एक बूँद टपक पड़ती है

दहलीज अपनी जगह से हिल जाती है
उसकी जगह नीर बिछ जाता है
आँसुओं को कोई तैर सकता है
दूध की बूँद कोई कैसे पार करे?

रात मेरी

मेरी रात जाग रही है
तेरा सपना सो रहा

सूरज का पेड़ उगा था
किरणों के छिलके झड़ गये

चन्न दा गोटा किसे ने
अम्बर तों अज ऊधेडिआ

मिआ किसे दी नींद नू
सुपने बुलावा दे गए
तारे सलोते रह् गए
अम्बर ने बूहा ढो लिआ

इह् जखम मेरे इश्क दे
सीते सी तेरी याद न
अज तोड़ के टाके असा
धागा वी तैनू मोडिआ

कितनी कु दरदनाक है
आज बीड मेरे इश्क दी
सभना उडीका दा असा
पत्तरा न्हृदे 'चा पाडिआ

धरती दा हऊका निकलिआ
असमान ने सिसकी भरी
फुल्ला दा सी इक काफिला
तसे थला' चो गुजरिआ

कणक दी इक महिक सी
बारूद ने अज पी लई
ईमान सी इक अमन दा
ओह् वी किते विकदा पिआ

दुनिआ दे चानण नू अजे
सदीआ उलाभे देंदीआ
इस प्यार दी रुत्ते तुसा
नफरत नू कीकण बीजिआ

इनसान दा इह् खून है
इनसान नू पुच्छदा पिआ

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

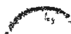
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
वह भी कहीं बिक गया

दुनिया की गलियों में
[illegible]
इस मुहब्बत के मौसम में
[illegible]

यह इन्सान का ख़ून है
इन्सान से सवाल करता है



ईसा दे सुच्चे होठ नू
सूली ने कीकण चुम्मिआ

इह किसतरा दी रात सी
अज दौड के लग्घी जदा
चन दा इक फुल्ल सी
पैरा दे हेठा आ गया

सूरज दा घोडा हिणकिआ
चानण दी काठी लहि गई
उमरा दे पडे मारदा
धरती दा पाधी रो पिआ

इह रात किओ अज लहि गई
कालख है कुझ कम्बदी पई
किधर किसे विशवास दा
शाइद टटहिणा चमकिआ

राता दी अक्ख फरकदी
इह तारे चन्गा सगण है
अम्बर दी उच्ची कन्ध'ते
चानण दा तीला लिशकिआ

की करे टाहणी कोई
फुल्ला दी ममता मारदी
इनसान दी तकदीर ने
इनसान नू अज आखिआ,

हुसना ते इश्का वालिओ!
जावो लिआवो मोड के
विशवास दा इक जातरू
जित्थे वी किधरे टुर गया!

ईसा के पास होठों को
सूली ने बढ़ के चूम लिया

यह किस तरह की रात थी
आज जब भागकर गुज़री
चाँद का इक टूक था
पैरों तले रौंदा गया

सूरज का माथा तिलमिलाया
रोशनी की काठी उतर गयी
उमरों का सफ़र तय करता
सदियों का मुसाफ़िर सो गया

यह रात आज क्या ठिठक गयी
सियाही भी कुछ कांप रही
कहीं किसी विश्वास का
शायद जुगनू चमक उठा

रात की ओस पसरती है
यह शायद अच्छा शगुन है
आसमान की ऊँची दीवार पर
रोशनी का एक सितारा चमक उठा

कोई टहनी क्या करे
फूलों की ममता सताती है
इन्सान की तकदीर ने
आज इनकार सा कहा,

हुस्न और इश्क़वालो !
जाओ, लौट आओ
विश्वास का एक यात्री
जहाँ कहीं भी चला गया

परदेसी

भरे होए ने दोवें बोझे
सारे पौण्ड ते रूबल डालर
लफज जिवें नोटा दीआ थहीआ
पर इह् रखम वदेशी सिक्का

इश्क तेरा मैं किवें खरीदा
बेप्रवाह् माण दे मत्ते
लफज दिआ ते मन दा सिक्का
बदला किह्डे काउंटर ऊत्ते

मैं आशक असलों परदेसी ।

दाग

कच्ची कंध मुहब्बत वाली
लिम्बिआ अते पोचिआ मत्था
फिर वी इसदी वक्खी विच्चों
राती इक खरेपड लत्था

असलों जिवें सुधार हो गया,
कंध दे उत्ते दाग प गया

इह् दाग अज हॅं हॅं करदा
इह् दाग अज बुल्लीहा टेरे
इह् दाग अज अद्धी पैं गया
इह् दाग अज छडीआ मारे

विट विट तकदा मेरी वल्ले
अपणी माँ दा मूह् सिआणे

परदेसी

दोनों जेबें भरी हुई हैं
सभी पाउण्ड, रुबल, और डालर
सब्ज़ बैग नोटों से बदहाल
पर यह रकम विदेशी सिक्का

तेरा दरद मैं न खरीदूं
बेपरवाह और अभिमानी
सब्र दर्द और मन का सिक्का
कौन से काउण्टर पर बदलूं

मैं आखिर बिलकुल परदेसी

दाग

मुहब्बत की कच्ची दीवार
लिपी हुई, पुती हुई
फिर भी इसके पहलू से
रात, एक टुकड़ा टूट गिरा

बिलकुल जैसे गुनाह हो गया
दीवार पर दाग़ पड़ गया

यह दाग़ आज हूँ हूँ करता
यह दाग़ आज होंठ बिसूरे
यह दाग आज ज़िद करता है
यह दाग कोई बात न माने

टुकुर टुकुर मेरे को देखे
अपनी माँ का मुँह पहचाने

विट विट तक्दा तेरी वल्ले
अपने पिओ दी पिठ्ठ पछाणे

विट विट तक्दा दुनीआ वल्ले
सौण लई पघूडा मग्गे,
दुनीआ दे कानूना कोलो
खेडण लई छणक्णा मग्गे

मुझ ते मुक्खा बोल नी माए
एस दाग नू लोरी देवा
मुझ ते मुक्खो बोल वाबला
एस दाग नू बुच्छड चुक्का

दिल दे वेहडे रात पै गई
एस दाग नू किज सुआवा !
दिल दे कोठे सूरज चढिआ
एस दाग नू किज छुपावा !

अन्नदाता

अन्नदाता !
मेरी जीभ'ते तेरा लूण ए
तेरा ना मेरे बाप दिआ होठा ते
ते मेरे इस बुत्त विच
मेरे बाप दा खून ए
मैं किवें बोला
मेरे बोलण तो पहिला
बोल पदा ए तेरा अन्न
कुछ कु बोल सन,

टुकुर टुकुर तेरे को देख
अपने यार की पीठ थपथपा

टुकुर टुकुर दुनिया को देखे
सोने के लिए पालना मांगे
दुनिया के बाजू ना न
खेलने को झुनझुना मांगे

माँ ! कुछ ना मुँह से बोले
इस दाग को लोरी सुनाऊँ
बाप ! कुछ तो कह
इस दाग को गोद में ले लूँ

दिल के आंगन में रात हो गयी
इस दाग को कैसे सुलाऊँ !
दिन की छत पर सूरज उग आया
इस दाग को कहाँ छुपाऊँ !

अन्नदाता

अन्नदाता !
मेरी ज़बान पर तुम्हारा नमक है
तुम्हारा नमक मेरे बाप के होंठों पर
और मेरे इस खून में
मेरे बाप का खून है
मैं कैसे बोलूँ ?
मेरे बोलने से पहले
तेरा अनाज बोल पड़ता है
कुछ एक बोल थे,

पर असीं अन दे कीड़े
ते अन भार-हेठा
ओह दब्बे गए हन

अनदाता !
काहे माँ बाप
दित्ते काहे न जम्म
काहे दा कम्म है
सिरफ कम्म
बाकी वी ता कम्म
कर दै इहो ही चम्म
ओह वी इक कम्म
इह वी इक कम्म

अनदाता !
मैं चम्म दी गुड्डी
खेड लै खिडा लै
लहू दा प्याला
पी लै पिला लै
तेरे साहवें खडी हा अँह
वरतण दी शै
जिवें चाहें वरत लै

उग्गी हा
पिसी हा
गुज्झी हा, विली हा
ते अज तत्ते तवे उत्ते
जिवें चाह परत लै
मैं बुरकी तो वद्ध कुझ नही
जिवें चाहे निगल लै
तू लावे तो वद्ध कुझ नही
जिवें चाह पिघल लै
लावे'च लपेट लै
कदमा'ते खडी हा
बाहवा'च समेट लै

पर हम अनाज के कीड़े
और अनाज के भार तले
वह बोल दबकर रह गये

अन्नदाता !
मेरे माता पिता कामगर
कामगर की संतान कामगर
कामगर का काम,
सिर्फ़ काम
बाकी भी तो काम
वही काम करता है,
वह भी एक काम
यह भी एक काम

अन्नदाता !
मैं मांस की गुड़िया
रेत से मिला ले
लहू का प्याला
पी ले पिला ले
तेरे सामने खड़ी हूँ
इस्तेमाल की चीज़
इस्तेमाल कर लो

उगी हूँ
पिसी हूँ
बेलन में बिली हूँ
आज गर्म तवे पर
जैसे चाहो उलट लो
मैं एक निवाले से बढ़कर कुछ नहीं
जैसे चाहो निगल लो
तुम लावे से बढ़कर कुछ नहीं
लावे में लपेट लो
सदमा में सही
बाँहों में समेट लो

अन्नदाता !
मेरी जबान
ते इनकार ?
इह किवें हो सकदै !
हा   प्यार
इह तेरे मतलब दी शै नही

इक गुनाहगार

रोज मन्नदा हा अकल दी
अज ना सही,
रोज कहिंदा हा 'हां'
अज 'नाह' सही

मेरी तोबा !
नील चन्द्र दी घाटी
जिथे उमरा दे साल
सदीआ पए तग्गदे
सुथरे आकाश वी ता
नित चम्मे नही लगद

नीलीआ रगा दी रत्त
अज फरकदी मेरी
ते मेरे खून वरगी
काली बोली हनेरी
दला जहे परवत
त उत्थे मूह भनदे बदलां दी टक्कर
ते अज मैं तक्का
गुनाहा दी खडड जहीआ
डूघीआ खड्डा

अन्नदाता !
मेरी पगार
और इकरार ?
यह कैसे हो सकता है !
हाँ प्यार
यह तेरे मतलब की चीज़ नहीं

इक गुनाहगार

रोज़ मानता हूँ अक्ल की
आज न सही,
रोज़ कहता हूँ, 'हाँ
आज 'न' सही

मेरी तौबा !
नील पत्थर की घाटी
जहाँ उमर के गान
नदियाँ बनते
उजले आकाश भी तो
रोज़ अच्छे नहीं लगते

नीली वादियों का रंग
आज तड़प रहा है
और मेरे रंग-ज़मीं
काली आँधी चढ़ आयी
देव दानव से पर्वत
जहाँ सर फोड़ते बादलों की टक्कर
और आज मैं देखूँ,
गुनाहों की खाई जैसी
गहरी खाइयाँ

ते उहा विच बद्दल
पाणी हो वगदे
सुथरे आकाश दी ता
नित चग्गे नहीं लगदे
रोज मन्नदा हा अक्ल दी
अज ना सही

समाज दी आवाज है जवान
मेरा खीसा वी है जवान
परचा लवागा
कुछ आखेगा धरम
टेक के मत्था वरचा लवागा

कूएगी रूह
ते पिछले खिआल
मग के साईकालोजी तो कारन
सरचा लवागा

रोज मन्नदा हा अकल दी
अज ना सहो

इडीपस

दहलीज तों उरली तरफ मेरा गुनाह
दहलीज तो परली तरफ मेरी सजा

सोचिआ सी अत सुच्ची
दुद्ध दी इह वाशना
पर होठ जूठे हो गए
होठा दी पहली 'वाज नें
तुतला के जो कुझ आखिआ
उह बोल झूठे हो गए

और उलझ जाता
पानी की तरह बहता
उससे आसमान भी तो
निज अपने नहीं लगता
रोज मानता हूँ अकल की
बात न सही

समाज की आवाज़ जवान है
मेरी जेब भी जवान है
परचा गूँगा
घर में कुछ कहूँगा
माथा टेककर कहता गूँगा

अपना कुछ कहूँगा
सरकार कुछ बोलेंगे
मनोविज्ञान से कारण माँगकर
उन्हें भी चुप करता गूँगा

रोज मानता हूँ अक्ल की
बात न सही

इडीपस

देहलीज के इस तरफ़ मेरा गुनाह
देहलीज के उस तरफ सजा

सोचा था बहुत सुच्ची
दूध की मह् महक
हर होंठ जूठे हो गये
होंठों की पहली आवाज़ न
तुतला कर जो कुछ कहा
वे बोल झूठे हो गये

अज अवख दे परदेस विच
लभदा हा अपनी नजर नू
नजर दारमिन्दी मिरी
डरदी है सुपना जोड़ के
डरदी है सुपना तोड़ के
साहमणे हुन्दी नही

जिस हनेरी रात विच
मालक सा सारी कुक्ख दा
अज ओह हनेरा ढल गया
अज डग्ग दित्ता जिसम ना
वातण दे काले नाग ने
इक जहर है चड़दा पिआ

हुण शायद मैं सारी उमर
जिसमा द चिक्कड फोल के
लॅभागा एस इश्क नू
वरजित अवरजित मास विच
लॅभागा एसे महिक नू
लॅभागा एस मुशक नू

इह की पता किसदी रजा !
दहलीज तो उरली तरफ मेरा गुनाह
दहलीज तो परली तरफ मेरी सजा

लगडी छा

रुक्खा दी एक पाल खलोती

जा अड्डी विच रोडा चुभ्भा
जा मिट्टे नू लोच आ गई
जा गाडे चप्पणी टुट्टी

आज भीड़ के दरम्यान मैं
अपनी नज़र को ढूँढ़ता हूँ
नज़र नादिम मेरी
डरती है पर्दा ओढ़कर
रहती है पर्दा गाड़कर
नाम। आगे नहीं।

जिस अँधेरी रात में
गालिब था सारी भीड़ का
वह अँधेरा बन गया
आज हम लिया है जिस्म का
सूरज के पास जाना
इस वक़्त है अब यह पता

अब शायद मैं सारी उम्र
जिस्मों के कीचड़ में हाथ डाल
ढूँढ़ूँगा इसी दुख को
वर्जित-अवर्जित भोग में
ढूँढ़ूँगा इसी मद्द को
ढूँढ़ूँगा इसी गन्ध को

क्या जानूँ यह किसकी रज़ा !
दहलीज़ के इस तरफ़ मेरा गुनाह
दहलीज़ के उस तरफ़ मेरी सज़ा

लँगड़ाता साया

दरअस्ल भी एक बतार सही है

या एड़ी में कंकड़ चुभ गया है
या टखने में मोच आ गयी है
या घुटने में जरब आ गयी है

ਜਾ ਮੋਡਢੇ ਦੀ ਹੁੱਡੀ ਉਤਰੀ

जा मोडढे दी हड्डी उतरी
जिऊँ जिऊँ टाहणी कदम वधावे
तिऊँ तिऊँ उसदा पैर लगावे

हर इक कूला टाहणी पिच्छे
सुक्की लक्कड दी इक टोहणी
जा वाहवा दा गुट्ट भज्जिआ
जा वाहवा दी भज्जी कूहणी
तारा इज पलचीआ गईआ
जुलफा विच अडकाहवा पईआ

जिने लवे रुक्ख दे पत्ते
उने लवे कुक्ख दे पत्ते
माली जिनीआ जाचा वाला
रुक्ख उ नीआ गडढा वाला
जिऊँ जिऊँ टाहणी पर वधाव
तिऊ तिऊँ उसदी छा लगावे

मुडीए तुडीए कुब्बे होईए
गुच्छा करीए अग आपणे
किसे रुक्ख दी छावें बहीए
ते उस रुक्ख द मत्थे अदर
जिहडा वी कोई फुल्ल खिडेगा
आओ ओस फुल्ल नू रोईए !

इक नगर
(इक दिन)

मीह कदा दा थम चुक्का ए

सारा नगर घडी कु पहिला
चिक्कड दे विच डिग्ग पिआ सी

या बच्चे की हड्डी टूट गयी है
जितना टहनी कदम बढ़ाती है
उतना ही उसका पाँव लँगड़ाता है

हर मायूस टहनी के पीछे
भूरी मकड़ी की एक फैलाती है
शायद कलाई उतर गयी है
शायद कुहनी टूट गयी है
सारे तार गड़बड़ हो गए हैं
सारी नसें उलझ गयी हैं

जिसने बालम पेड़ के पाले हैं
जाने कोमल कोंपल के पाले हैं
माली जितना सयाना होगा
दरख्त उतना गाँठीवाला होगा
जितनी टहनी कदम बढ़ायेगी
उतना ही सारा लँगड़ायेगा

आओ, हम गुड़-मुड़ के कुबड़े हो जायें
अपने अंग इकट्ठा कर लें
किसी दरख्त के साये में बैठें
और उस दरख्त के साये पर
जो भी कोई फूल खिलेगा
आओ, उस फूल को रो लें।

एक नगर
(एक दिन)

मेह कब का थम चुका है

सारा नगर पल भर पहले
कीचड़ में गिर गया था

सलीआ परो मगा उटिठआ
जिस वडी ते बाहुना रगदा
जिस टुट्ट ते पैर टिवाग
कोई बास ववगी विच्च धरगा
मसा लक्ख नू सिद्धा करदा
खडे होण नू जूझ रिहा ए
मीह वदो दा थम चुक्का ए
इह मत्थे ता, पुडपुडीआ तो
अजे वी मुडका पृझ रिहा ए

एस नगर वी सुपन औंद
किन्नीआ वी सोना नू भीटो
फिर वी अदर आ जादे ने
किधरे सगमरमरी यादो
दस्स थोम दी पा जाद ने

सारा नगर उन्हा दे आखे
नीदर दे विच तुर पदा ए
दूर भविख दा माहली माहली
कुछ रमता तैह कर लदा ए

फिर रसते विच सूरज दा
इक अड्डी खोडा इसनू लग्गे
टुट जाए गोडे दी चप्पणी
अरका दे विच्चो लहू वग्गे

वरतमान दी बद गली
ते दुक्ख सुक्ख दी कद्ध साहमणे

रात वराते जिन्हा पैरी
जिहडे वी रसते ते जादा
सुबह सवेरे ओही पैरी
उसे रसतिओ मुडके औदा

इज हमेशा एथा तुरदा
अते हमेशा एथे रहिदा

हथेलियों के बल मुश्किल से उठा
किसी सहारे पर बाजू रखता
किसी ईंट पर पाँव टिकाता
कोई बोझ बगल में रखता
मुश्किल से कमर सीधी करता
खड़ा होता सा बूढ़ा रहा है
यह वक्त का कम बुरा है
यह साये और सलवटियों से
अभी तक पसीना पोंछ रहा है

इस शहर में भी गाँव आये हैं,
गाँव के विराट विस्तार ही भर जा
वह फिर भी अन्दर आ जाते हैं
यहीं कोई समभरसर की याद है
यह उनका पता न आ...

सारा शहर उनका बड़ा मातम
नींद में घर देता है
दूर भविष्य का जल्दी-जल्दी
कुछ नाम ... लेता है

फिर रास्ते में सूरज की
इक ठोकर इस लगती है
घुटन पर चोट आती है
सुर्खियों में खून टपकता है

वक्त मार की चल गती
सामने धुआँ और धूप की दीवार

रोज के समय जिन पैरों
जिस रास्ते पर भी जाता है
सुबह के थका उन्हीं पैरों
उसी रास्ते लौट आता है

यूँ हमेशा यहीं से चलता है
और हमेशा यहीं रहता है

(ते फेर इक दिन)

रात यदो की लग्घ चुकी ए
सारा नगर चौंकडी मारी
इक फलसफी वागू बैठा

ना कोई गल्ल सुणे ना आखे
ना कोई इसदे मत्थे उत्ते
लीक हरख दी, लीक सोग दी

जा ता इसने वरतमान दी
बद गली दा भेत बुझिआ
इक फलसफी वागू बठा
वे जा अज दे मीह विच दठठा

मीह कदा दा थम चुक्का ए

इक शहर

1

जेहडी फसल तारिआ बीजी
किसने चोर गुदामी पाई
बद्दल दी वोरी नू झाडा
रात दी मडी उड्डुन घट्टे

च दरमा इक भुक्खा वच्छा
सुक्के थण नु मूह मारदा
धरती-माँ किल्ले ते वज्झी
अबर दी खुरली नू चट्टे

(और फिर एक दिन)

रात कभी की गुज़र चुकी है
सारा नगर आलथी-पालथी मार
इक पत्थर की तरह बैठा हुआ है

न कोई बात सुनता है न कहता है
न इसके माथे पर
कोई रंग की रेखा है न ही कोई शोर की रेखा

या तो इसने कायनात की
बद दुआ का भेद पा लिया है
और इक पत्थर की तरह बैठा हुआ है
या फिर आज [illegible] गिर गया है

यह कब का मर चुका है

एक शहर

1

यह फसल जो सितारों ने बोयी थी
किसने इसे चोर गोदाम में डाल लिया
बादल की बोरी को झाड़कर देखा
रात की मण्डी में गर्द उड़ रही है

चाँद एक भूखे बछड़े की तरह
सूखे थन को निचोड़ रहा है
धरती माँ अपने थान पर बँधी
आकाश की चरनी को चाट रही है

2

हसपताल दे बूहे अग्गे
हक्क, सच, ईमान ते कदरां
किन्ने लफ्ज़ बीमार पए ने
भीड़ जही इक लग्ग गई ए

खबरे कोई लिखेगा नुसखा
खबरे नुसखा लग्ग जावेगा
पर हाली ता इज जापन्ना
अउध इन्हा दी पुग्ग गई ए

3

एस शहर दे विच्च इक्क थावें
था कि जित्थे रहण नियावें
जिस दिन कोई ना मिले मजूरी
उस दिन जिन्द उन्हा दी पूरी

पहली रात बुढेपे वाली
कन्ना दे विच आ के कह गई
कि एस शहर दे विच उन्हा दी
अह्लल जवानी चोरी हो गई

4

कल रात कहर दा पाला
अज तडके सवा सामती नू
सडक दे उत्तो लाश मिली है
नाओ थाओ कुछ पता ना लग्गे

मढीआ दे विच अग्ग पई बलदी
कोई ना एस लाश नू रोइआ
जा कोई मोइआ है इक मगता
जा कोई शाइर फलसफा मोइआ

2

मालगुजार के दरवाजे पर
हल, गाय, ईमान और बछड़े
या कितने ही सवक धीमार पड़े हैं
एक भीड़-सी इकट्ठी हो गयी है

जाने कोई गुस्सा निकलेगा
जाने यह गुस्सा कब आयेगा
लेकिन अभी तो ऐसा लगता है
हाथ सिले हुए हो गए हैं

3

इस शहर में एक घर,
घर कि जहाँ बेघर रहते हैं
जिस दिन कोई मजदूरी नहीं मिलती
उस दिन वह परेशान होते हैं

बुढ़ापे की पहली रात
उनके पास से धीरे से कह गयी
कि इस शहर में उतरी
मेरी जवानी चोरी हो गयी

4

कल रात बला की सर्दी थी
आज सुबह सेवा-समिति को
एक लाश सड़क पर पड़ी मिली है
नाम व पता कुछ भी मालूम नहीं

श्मशान में आग जल रही है
इस लाश पर रोनेवाला कोई नहीं
या तो कोई भिखारी मरा होगा
या शायद कोई पत्रकार मर गया है

5

किसे मरद दी बुक्कल दे विच
किसे कुड़ी ने चीक मार के
पिंड्डे तो इक पत्थर लाही

थाणे दे विच हासा मचिआ
काहवाघर विच ही ही होई

सड़का ते कुछ हाकर फिरदे
इक इक पैसे खबर वेचदे
रहिंदा पिंड्डा फेर नाचदे

6

गुलमोहर दे रुखा हेठा
लोकी इक दूजे नू मिलदे
बड़ी ज़ोर दी हसदे गऊदे
इक दूजे तो अपनी अपनी

मौत दी खबर छुपाना चाहुंदे
चिट्टा जिहा कबर दा पत्थर
हत्या दे विच्च चुरकी फिरदे
अते लाश दी राखी करदे

7

खड़खड़ खड़खड़ करन मशीना
शहर जिवें इक छापाखाना
हर इक बन्दा एस शहर दा
इक इक कल्ले अक्खर वांगू

हर पैगम्बर—कम्पोजीटर
अक्खर मेल मेल के वेखे
अक्खरां दे विच अक्खर उणदा
पर दे कोई फिकरा ना बणदा

5

किसी मन के आकाश में
कोई सहमी चीख उठी
और उसके बदन से कुछ टूट गिरा हो

शाम में एक कहकहा गुमसुम हुआ
फुटपाथर में एक हँसी बिखर गयी

सड़कों पर कुछ लोग फिर रहे हैं
एक-एक पैर में नजर बेच रहे हैं
बचा-खुचा जिस्म फिर से नोच रहे हैं

6

गुलमोहर के पेड़ तले,
लोग एक-दूसरे से मिलते हैं
प्यार से हँसते हैं गाते हैं
एक-दूसरे से अपनी-अपनी।

मौत की ख़बर सुनाना चाहते हैं
संगमरमर क़ब्र का तावीज़ है
हाथों पर उठाये-उठाये फिरते हैं
और अपनी लाश की हिफाज़त कर रहे हैं

7

मशीनें खट-खट कर रही हैं
शहर अब एक छापाख़ाना है
इस शहर में एक-एक इन्सान
एक-एक अक्षर की तरह अकेला है

हर पैगम्बर एक कम्पोज़ीटर
अक्षर जोड़ जोड़कर देखता है
अक्षरों में अक्षर चुनता है
कभी कोई कविता नहीं बन पाता

४

दिल्ली एस शहर दा नाओ
कोई नाओ वी हो सक्दा ए
(नावा दे विच्च की पिआ ए !)
रोज भविख दा सुपना राती

वरतमान दी मैली चादर
अद्धी अपने ऊपर ताणे
अद्धी अपने हेठ विछावे
किन्ना चिर कुझ सोचे, जागे
फिर नीदर दी गोली खावे

तीसरी कसम

जिंद-कुडी नू कसम पहिलडी
'वली' नाआ दा इक सी बंदा
आप हुदरा अक्खड, छिंदा

पहिला सच्च जिहदा सी 'हूरा'
अंतिम सच्च जिहदा सी 'मुक्का'

जिंद-कुडी दा मास चक्ख के
मुट्ठी दे विच सोना देके
छाती उत्ते पैर रक्ख के
जरी दुशाले ताण बोलिआ—

'तू मेरी हशरा तो तीवी
तू मेरे लई जम्मो जीवी
तू ना होर किस दी होवी"

8

दिल्ली इस शहर का नाम है
कोई भी नाम हो सकता है
(नाम में क्या रखा है!)
भविष्य का सपना रोज रात को

वर्तमान की मैली चादर
आधी ऊपर ओढ़ता है,
आधी नीचे बिछाता है,
कितनी देर कुछ सोचता है, जागता है
फिर नींद की गोली खा लेता है

तीसरी कसम

जिन्द-कुड़ी की पहली कसम
'बलि' नाम का एक आदमी था
अक्खड़ और बेलगाम

जिसका पहला सच था 'ठहाका',
आखिरी सच था 'मुक्का'

जिन्द-कुड़ी का माँस चखकर
मुट्ठी में सोना देकर
छाती पर पाँव रखकर,
जरी दुशाले तानकर बोला,

"तू मेरी युग-युग से तिरिया
मेरे लिए जीना मरना
और किसी की तू मत होना।"

एना कह के, कसम खुआ के
जिन्द-कुडी नू महली पा के
चौपट खेडण बैठ गया उह

जिन्द-कुडी नू कसम दूसरी
'वली' नाओ दा इक सी बन्दा
जिसने बगली दे विच पाइआ

इक भरोसा नेतर हीणा
इक चेतना सेधों हीणी

रिद्धी दा इक धागा लैके
सिद्धी दी इक सूई लैके
जिन्द-कुडी दी जीभ सीऊँ के
कन्ना विच गुरमतर दित्ता

"भटकी होई आतमा बच्चा !
जो कुझ दिस्से ओहीओ कच्चा
जो ना दिस्से ओहीओ सच्चा ।"

एना कह के, कसम खुआ के
जिन्द-कुडी नू भोरे पा के
लाण समाधी बैठ गिआ उह

भुक्खी पिआसी जिन्द कुडी ने
सोने नू इक चक्क मारिआ
मिट्टी नू इक चक्क मारिआ
दोवें कसमा भन्न के बोली

"मेरे अपणे मत्थे अन्दर
तीजा नेतर खुल रिहा है
दूर सजण ते राह दुहेला
आपे गुरु ते आपे चेला
तीजी कसम खाण दा वेला"

इतना कहकर कसम दिलाकर
जिन्द-कुड़ी को महल में लाकर
वह चौसर खेलने बैठ गया

जिन्द-कुड़ी को दूसरा कसम
'बलि' नाम का एक आदमी था।
जिसने अपनी थाली में रखे थे

एक भरोसा दृष्टिहीन
एक चेतना दिशाहीन

सिद्धि का एक धागा लेकर
सिद्धि को लग गई नजर
जिन्द-कुड़ी की जीभ को छीलकर
कानों में गुरु-मन्त्र दिया

"भटकी हुई आत्मा बच्चा!
जो दिखता है वह है कच्चा,
जो नहीं दिखता वह है सच्चा।"

इतना कहकर कसम दिलाकर,
जिन्द-कुड़ी को कोठरी में डालकर
वह समाधि लगाकर बैठ गया

भूखी-प्यासी जिन्द कुड़ी ने
सोने को परखकर देखा
मिट्टी को परखकर देखा
दोनों कसम तोड़कर बोली

"मेरे अपने माथे अन्दर
तीसरा नेत्र खुल रहा है—
दूर सजन और राह दुहेला
आप गुरु और आप ही चेला
तीसरी कसम खाने की वेला!"

खण्ड—3

वारिस शाह नूँ।

अज आखा वारिस शाह न
कितो कबरा विच्चो बोल।
ते अज किताबे इश्क दा
कोई अगला वरका फोल।

इक रोई सी धी पंजाब दी
तू लिख लिख मारे वैण,
अज लक्खा धीआ रोदीआ
तैनू वारिस शाह नू कहण

उठ दरदमंदा दिआ दरदीआ
उठ तक्क अपणा पंजाब
अज बेले लाशा विछीआ
ते लहू दी भरी चनाब

किसे ने पंजा पाणीआ विच
दित्ती जहिर रला
ते उन्हा पाणीआ धरत नू
दित्ता पाणी ला

इस जरखेज जमीन ने
लू लू फुट्टिआ जहर
गिठ गिठ चढीआ लालीआ
ते फुट फुट चढिआ कहर

विहु वल्लिसी वा फिर
वण-वण वग्गी जा
हर इक वांस दी वझली
दित्ती नाग वणा

नागा कीले लोक मूह
वस फिर डग ही डग
पलो पली पजाव द
नीले पै गए अग

गलिआ टुट्टे गीत फिर
तव लिओ टुट्टी सन्द
त्रिजणो टुटीआ सहेलीआ
चरखड़े धूकर वन्द

सणें सेज दे वेडीआ
सुडडण दित्तीआ रोहड
सणे डालीआ पीघ अज
पिपला दित्ती तोड

जिस्ये वजदी फूक प्यार दी
वे ओह वझली गई गुआच
राझें दे सभ वीर अज
भुल गये उसदी जाच

धरती ते लहू वस्सिआ
कबरा पईआ चोण
प्रीत दीआ शाहजादीआ
अज विच मजारा रोण

अज सब्भे 'कैदो' वण गये
हुसन इश्क दे चोर
अज कित्थो लिआईए लब्भ के
वारिस शाह इक होर

बाँसुरी बजाना भूल गये

धरती पर लहू बरसा
कब्रों में खून टपकने लगा
और प्रीत की शहज़ादियाँ
मज़ारों में रोने लगीं

आज जैसे सभी 'कैदो' बन गये
हुस्न और इश्क के चोर
मैं कहाँ से ढूँढ़ लाऊँ
एक वारिस शाह और

अज आखा वारिस शाह नूं
किता पवरा विच्चो बोल !
ते अज किताब इश्क दा
कोई अगला वरका फोल !

मजबूर
(1947)

मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी
मैं भी ता इक इनसान हा
अजादीआ दी टक्कर विच्च
इक सट्ट दा निशान हा
उस हादसे दा चिह्न हा
जो मा मेरी दे मत्थे उत्ते
लगणा जरूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

धिरकार हा मैं उह जिहडी
इनसान उत्ते पै रही
पैदाइश हा उस वक्त दी
जद टुट रह सी तार
जद बुझ गया सी सूरज
ते चन्न वी बेनूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

मैं खरीद हा इक जखम दा
मैं धब्बा हा मा दे जिसम दा
मैं जुलम दा उह बोझ हा
जो मा मेरी ढोदी रही
मा मेरी नू पट 'चा
सडिआद इक औंदी रही

काफ़िर साक़ी! मैं तुमसे कहती हूँ
अभी बज़्म न उठो
और दर्द की किताब का
कोई नया वरक खोलो।

मजबूर
(1947)

मेरी माँ की कोख मजबूर थी
मैं भी तो एक इन्सान हूँ
आज़ादियों की टक्कर में
उस चोट का निशान हूँ
उस हादसे की लकीर हूँ
जो मेरी माँ के माथे पर
लगनी ज़रूर थी
मेरी माँ की कोख मजबूर थी

मैं वह लानत हूँ
जो इन्सान पर पड़ रही है
मैं उस वक्त की पैदाइश हूँ
जब तारे टूट रहे थे
जब सूरज बुझ गया था
जब चाँद की आँख बेनूर थी
मेरी माँ की कोख मजबूर थी

मैं एक जख्म का निशान हूँ
मैं माँ के जिस्म का दाग हूँ
मैं ज़ुल्म का वह बोझ हूँ
जो मेरी माँ उठाती रही
मेरी माँ को अपने पेट से
एक दुर्गन्ध सी आती रही

कौण जाण सकदा है
कितना कु मुश्किल है
अखरां दे जुलम नू
इक पेट दे विच पालणा
अगा नू झुलसणा
ते हड्डा नू बालणा
फिर हा उस वक्त दा मैं
आजादी दीआ वरीआ नू
पै रिहा जद दूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

हवाड
(नवम्बर 1962)

इक दोसती दे फुल्ल 'चो
आई हवाड खून दी
अक्ला दा मत्था ठणकिआ
तहज़ीब दे इखलाक दे
पिण्डे 'त मुढ़का आ गया
ते आपणे दन्दा दे हेठा
जीभ टुक्की अमन ने
अमन दी इक सहुँ ने

इक दोसती दे फुल्ल 'चो
आई हवाड खून दी
सुंघी है काली रात ने
सुंघी है चिट्टे दिहुँ ने

इह खून है विश्वास दा
नाडा च खौल जायेगा
डुल्लेगा मिट्टी चुम्म के
उगेगा मौल जायेगा

कौन जाने कितना मुश्किल है
पेट में एक भूख को पालना
अंग अंग को झुलसाना
और हड्डियों को जलाना
मैं उस वक्त का पल हूँ
जब आज़ादी के देश पर
और पेट रहा था
आज़ादी बहुत पास थी
बहुत दूर थी
रोटी माँ को बोल मजबूर थी

गन्ध

(अगस्त, 1962)

एक दोस्ती के पुल से
खून की गन्ध आयी
अमन का माथा ठनका,
तहजीब में और इन्सानियत में
अमन पर पसीना आ गया
अमन ने, और अमन के बाद ने
अपनी जबान दाँतों तले दबा ली।

एक दोस्ती के पुल से
खून की गन्ध आयी
इस गन्ध को काली रात ने सूँघा
इस गन्ध को उजले दिन ने सूँघा

यह विश्वास का खून है
रगों में लौट जायगा
बहेगा मिट्टी चूमकर
उगेगा, और फैल जायगा

उठेगी इसदी वाशना
कणका 'च फैल जायेगी
उठेगी इसदी वाशना
कलमा 'च फैल जायेगी

इह वाशना इतिहास दे
साहवा चो औंदी रहेगी
कि खून दी इह वाशना
वारस है साडे जखम दी

इह जखम, जु इतिहास दी
छाती ते खुणिआ जायेगा
इतिहास, जिहडा खून दे
इस अमल ता शरमायेगा

इह खून, जा इनसान दे
हत्था 'चो वगदे जा रहे
इह जखम, जो इनसान दे
हत्था ते लगदे जा रहे

इह ओही सोहणे हत्थ ने
जो फुल्ला नू बीज सकदे ने
इह ओही आशक हत्थ ने
जो हुसना ते रीझ सकदे ने

इह ओही हुनरी हत्थ
जो साजा नू छेड सकदे ने
इह ओही किरती हत्थ ने
जो सुपने जोड सकदे ने

इह हत्थ पाणी पौण ते
अगनी नू बन्ह सकदे ने
सूरज दा चुल्हा बाल के
हांडी नू रिंह सकदे ने

इसकी गन्ध उठेगी
गेहूँ में पैन आयेगी
इसकी गन्ध उठेगी
कलमों में पैन आयेगी

यह गन्ध इतिहास के
सीनों में भरी रहेगी
कि खून की यह गन्ध
हमारे जख्म की खातिर है

यह जख्म इतिहास के
सीने पर खुद जायेगा
और खून के इस अक्स पर
इतिहास शर्मिन्दा रहेगा

यह खून जो हत्यारों के
हाथों में बहते जा रहे
यह जख्म जो हत्यारों के
हाथों पर लगते जा रहे

यह वही प्यारे हाथ हैं
जो फूलों को उगा सकते हैं
यह वही आखिर हाथ हैं
जो हल पर रीत सकते हैं

यह वही हुनरी हाथ हैं
जो गाड़ी को ठेल सकते हैं
यह वही कर्मी हाथ हैं
जो सपने जोड़ सकते हैं

यह हाथ पानी पवन और
अग्नि को बांध सकते हैं
सूरज का चूल्हा जलाकर
हांडी को रांध सकते हैं

ਇਹ ਹੱਥ

ईहं हत्थ जो धरती दीआं
जुलफा सँवार सकदे ने
इह ओही सोहणे हत्थ
जो दुनीआ उसार सकदे ने

फुल्ला ते जुलफा दी कसम
हत्था ते जखम लाओ ना
इह कारव दे हत्थ ने
कातिल बणाओ ना

अज हत्थ देवो साथीओ
कि हत्था दी राखी वासते
उह हत्थ जो जाबर बणे
अज मोड़ दित्ते जाणगे
उह हत्थ जो कातिल बणे
अज तोड़ दित्ते जाणगे

27 मई, 1964

इह किसतरा दी रात सी !
इह किसतरा दी बात है !
नीदर सी अज केहो जही
सुपने दा मत्था ठणकिआ

चरखा जु भज्जा चन्न दा
पच्छी 'चो तारे ढह पए
धरदी दे कम्बदे हत्थ 'चो
पूणी नू किसने खोह लिआ !

इतिहास न हऊका लिआ
समया ने तकिआ सहम के

यह हाथ जो धरती की
सूरत संवार सकते हैं
यह वही प्यारे हाथ हैं
जो दुनिया उभार सकते हैं

फूलों और गुलशन की कसम
हाथों पर कलंक न लगाओ
यह शानदार हाथ हैं
इन्हें कातिल न बनाओ

आज हाथ दो जो साथियो
कि हाथों की हिफाजत के लिए
यह हाथ जो कातिल बने
आज सारे दिन जायेंगे
यह हाथ जो कातिल था
आज सारे दिन जायेंगे

27 मई, 1964

यह किस तरह की रात थी!
यह किस तरह की बात है!
आज मौत कैसी थी
कि गगन का माथा ठनक उठा

धान का पत्ता टूट गया
टोकरी से लाल गिर पड़े
धरती के कांपते हाथ से
प्याली को किसने छीन लिया!

इतिहास ने गहरी सांस ली
वक्त ने सहमकर देखा

पूरब दी काली अवस विच
सूरज दा अथरु लिशकिआ

इक मन मेरे दा महल सी
पै गई अचानक भऊजली
इह गीत है वेहो जिहा !
जु सप दे विच अटकिआ

अंबर दी चादर पाड़ के
कफन कोई दे दा गिआ,
इह लाश किहड़े फुल्ल दी
अज बाग सारा रो पिआ

चानण दी सूई
(27 मई 1964)

सारी किममत उधड़ी होई
देस मेरे दा कज्जण पाटा
मंगदा इक चानण दी सूई

वक्त महा सागर सी कोई
घोर हनेरा रिड़क रिड़क के
आखर चौदा रतना वांगू
लभ लई चानण दी सूई

हर सगराम जिवें इक धागा
हर मुश्ना धागे नूं रंगे
जिंदड़ी दा मैं पीहड़ा डाहिआ
किसमत दी फुलकारी छोही

सूरज की काली आँख में
सूरज का आँसू चमक उठा

मन का एक मंदिर था
अंधकार टूटकर ढह गयी
यह आज का दीप कैसा है !
घर घर में अंधेरा

आसमान की चादर फाड़कर
कोई सपना जी रहा है
यह किस सूरज की बात है
आज सारा आग ला दिया

रोशनी की सूई
(27 मई 1964)

सारी किस्मत उधड़ी हुई
मेरे देश की आत्मा फटी हुई
रोशनी की एक सुई माँगनी थी

यहाँ एक महासागर था
घोर अंधकार का मंथन किया
और आखिर चौदह रत्नों की तरह
रोशनी की सुई ढूँढ निकाली

हर सवाल जैसे एक धागा था
हर सपना धागे को रंग देता
मैं जीवन का चोला टाँककर
किस्मत की फुलकारी काढ़ने लगी

पहिला फुल्ल सुतंतरता दा
फुल्ल दूसरा लोकराज दा
सत्त डडीआ सत्तर वेला
तीजा फुल्ल खुशहाली वाला

माण मत्तीआ रंग रत्तीआ
मम्म जिवें रान नई पत्तीआ

हूणे हुणे मैं इस फुलवारी
चिट्टा फुल्ल अमन दा छोहिआ
हाए मैं मर गई
इह की होइआ

हत्थ फुलवारी पकडी होई
धागा पाण लगी सा कोई
बम्ब गया पीहडी दा पावा
टुट्ट गई चानण दी सूई

इक गीत
(15 अगस्त 1965)

इक वेडीआ दा गीत सी
हत्थकडीआ दा गीत सी
सरगम सी साडे इश्क दी
'जेल' पंचम स्वर सी
ते सतवा स्वर 'सूली' सी
होठ तडप उठदे सन
बहुत-बहुत मुशकिल सी
पर असा गीत गाया सी

पहला फूल रातरानी का
दूसरा फूल मोरगंध का
सात टहनियाँ और मसार वमें
तीसरा फूल गुलदाऊदी का

मार का याली, रंग न दूर्वा
पावनताएँ अब नई पत्तियाँ

अभी अभी मैं इन फूलदानों में
असल का हिस्सा पर जोड़ने लगी थी
हाय, मैं मर गयी !
यह क्या हुआ—

हाथ से फूलदानी छूट गयी
मैं पागल डर से हो गयी थी
पीछे का ताला खोल गया
और रातरानी की सुई टूट गयी

एक गीत

(15 अगस्त 1965)

इन बढ़िया का गीत था
इसकी बढ़िया का गीत था
हमारे हृदय की सरगम थी
जन-जन का स्वर था
और मानवी स्वर गूंजी था
होंठ तरुण उठे थे
बहुत-बहुत मुश्किल था
पर हमने गीत गाया था

पहिला फुल्ल सुतंतरता दा
फुल्ल दूसरा लोकराज दा
सत्त डंडीआ सत्तर वेला
तीजा फुल्ल खुशहाली वाला

माण मत्तीआ रंग रत्तीआ
वग्ग जिवें सन वंई पत्तीआ

हुणे हुणे मैं इस फुलकारी
चिट्टा फुल्ल अमन दा छोहिआ
हाए मैं मर गई
इह की होइआ

हत्थ फुलकारी पकड़ी होई
धागा पाण लगी सा कोई
कम्ब गया पोहडी दा पावा
टुट्ट गई चानण दी सूई

इक गीत
(15 अगस्त 1965)

इक वेढीआ दा गीत सी
हत्थकडीआ दा गीत सी
सरगम सी साडे इश्क दी
'जेल' पंचम स्वर सी
ते सतवां स्वर 'सूली' सी
होठ तड़प उठठे सन
बहुत-बहुत मुश्किल सी
पर असां गीत गाया सी

पहला फूल स्वतन्त्रता का
दूसरा फूल लोकराज का
सात टहनियाँ, और सत्तर बेलें
तीसरा फूल खुशहाली का

मान की माटी, रंग में डूबी
योजनाएँ जैसे कई पत्तियाँ

अभी अभी मैं इस फुलकारी में
अमन का चिट्टा फूल काढ़ने लगी थी
हाय, मैं मर गयी!
यह क्या हुआ—

हाथ में फुलकारी पकड़ी रह गयी
मैं धागा डालने ही लगी थी
पीढ़े का पाया काँप गया
और रोशनी की सूई टूट गयी

एक गीत
(15 अगस्त 1965)

एक बेड़िया का गीत था
हथकड़ियों का गीत था
हमारे [illegible] की सरगम थी
'जेल' पंचम स्वर था
और सातवाँ स्वर सूली था
होंठ तड़प उठे थे
बहुत-बहुत मुश्किल था
पर हमने गीत गाया था

इह बेडीआं दा गीत सी
हत्थकडीआं दा गीत सी
ते उह वी वक्त सी
आवाज़ नज़रबन्द सी
दह हुक्मा दे हुक्म मोडदा
पैरा दा लोहिआ तोडदा
तै गौण सुनण वालिआ दे
मूह ते लाली धूडदा
सारे देस विच विचरदा रिहा
गलीआ दे विच फिरदा रिहा
ते गरम गुच्चा लहू बण के
रगा विच तुरदा रिहा

रहमत है ओसे गीत दी
नेहमत है ओसे गीत दी
कि बेडीआ दा गीत अज
पैरा दा गीत है
पैरा दी मंज़िल दा गीत है
ते कडीआ दा गीत अज
हत्था दा गीत है
हत्था दी मिहनत दा गीत है

सरगम है साडे इश्क दी
मिहनतकशा दे इश्क दी
हुक्म पचम स्वर है
ते सतवा स्वर सुततरता

हक्क लैणा—हक्क देणा
ते सुततरता ना सोहणी ना सुहाणी
इक्को राग दी रोही अवरोही

एक बेडियो का गीत था
हथकडियो का गीत था
और वह भी वक्त था
आवाज नजरबन्द थी
यह सभी फरमान टालता
पैरो का लोहा काटता
और सुननेवालो के
चेहरो पर सुर्खी छिडकता
सारे देश मे घूमता रहा
गलियो मे फिरता रहा
और गम सुच्चा लहू बनकर
रगो मे चलता रहा

रहमत है उसी गीत की
नेहमत है उसी गीत की
कि बेडियो का गीत
आज पैरो का गीत है
पैरो की मजिल का गीत है
हथकडियो का गीत
आज हाथो का गीत है
हाथो की मेहनत का गीत है

हमारे इश्क की सरगम है
मेहनतकशो के इश्क की
'हक' पचम स्वर है
और सातवाँ स्वर 'स्वतन्त्रता'

हक लेना और हक देना
स्वतन्त्रता न छीननी, न छिनवानी
एक ही राग की आरोही-अवरोही

बहुत—बहुत मुश्किल है
पर असां गीत गाणा है
भरी महफिल वालिओ
इह गीत बहुत सुच्चा है
भज साज अपणे बोल ने
आवाज़ अपणे बोल है
पर गीत दी विरासत दा सवाल है
राग दी अज़मत दा सवाल है

याद रखणा एस विच्च
इक स्वर वरजित वी हुंदा ए।

शतरज
(सितम्बर 1965)

तेरे कोल नफरत दी सिगरट
मेरे कोल सिगरट दा लाईटर
आ तेरी सिगरट जला दिआं
इक बडा डूंघा साह भरीं
ते फेर इसदा खुमार वेखीं
रूह लरज़ जायेगी
पैर झूम उठ्ठेगा
ते सारी दुनीआ
नाचीज नज़र आयेगी

तेरे वडडे वडेरे
पग्गां वटादे सन
हुक्के वटादे सन
छापां वटादे सन
मेरे वड्डे वडेरे
घाह दीआं पलीआं वटादे सन
लहू दीआं चुलीआं वटादे सन

बहुत-बहुत मुश्किल है
पर हमको गीत गाना है
भरी महफ़िलवालो !
यह गीत बहुत सच्चा है
अब साज़ अपने पास हैं
आवाज़ अपने पास है
पर गीत की किस्मत का सवाल है
राग की अज़मत का सवाल है

याद रखना इसमें
एक स्वर वर्जित भी होता है।

शतरंज
(सितम्बर 1965)

तेरे पास नफ़रत की सिगरेट
मेरे पास सिगरेट का लाइटर
आओ, तुम्हारी सिगरेट जला दूं
एक बहुत गहरी सांस लेना
और फिर इसका खुमार देखना
रूह लरज़ जायेगी
पर झूम उठेगा
और सारी दुनिया
नाचीज़ नज़र आयगी

तेरे बुजुर्ग,
पगड़ी बदलते थे
हुक्का बदलते थे
अँगूठी बदलते थे
मेरे बुज़ुर्ग
घास की गाँठ बदलते थे
लहू का चुल्लू बदलते थे
यह सभी दोस्ती के चिह्न थे

असी होठा दे झूठ वदलागे
होठ मेरे थूठ तेरे
होठ तेरे थूठ मेरे
इह दोस्ती दी नवीं रसम है
ते नवी रसम नू
वेखण दा नवा नुकता है
इश्कीआ गज़ला पुराणी बात है
इह नफरत दी गज़ल दा
इक वडा नवा मकता है

पुराणे दोसता दा फिक्र काहदा
विदा कर खुदा हाफिज आख के
सिरफ हथिआर रख लै
पुराणे दोस्त दी
पुराणे वक्त दी
इक प्यारी निशानी समझ के

ते एस खुशी विच्च
हमसाइआ नू बुला
जग दी चौपट विछा
हत्थ तेरे
टक गोलीआ—नरदा बिगानीआ
ते चाल मेरी

अजीब खेड है शतरज दी
मेरे दोस्त !
इह खेड दा नवीन करण है

हम होठो के झूठ बदलेंगे
होठ मेरे, झूठ तेरे
होठ तेरे, झूठ मेरे
यह दोस्ती की नयी रस्म है
और नयी रस्म को
देखने का नया नुक्ता है
इश्किया गजलें पुरानी बात है
यह नफरत की ग़ज़ल का
एक नया मकता है

पुराने दोस्तो का गम कैसा
विदा कर दे
खुदा हाफिज कहकर
सिर्फ हथियार रख ले
पुराने दोस्त की
पुराने वक्त की
एक प्यारी निशानी समझकर

और इस खुशी मे
हमसाये को आवाज दे
जग की शतरज खेल
हाथ तेरे
टक तोपें मोहरे बेगाने
और चाल मेरी

अजीब खेल है शतरज का
मेरे दोस्त!
यह खेल का नवीनीकरण है

दोस्तो !

(17 सितम्बर, 1965)

रात दा उलाभा
कि दिहुँ जाण लग्गा सी
मेरी दहलीज टप्प के
मुठ तारे चुरा के लै गया

दिहुँ दा शिकवा
कि रात जाण लग्गी सी
मेरी दहलीज टप्प के
मुठ किरना चुरा के लै गई

हाठ चादी दे घोल सन
मिसरी दा टोटा घोल के
फेर रात मुसकराई
ते दिहुँ गुडकिआ
तारा कोई घटिआ नही
किरना दा कुछ नही बिगडिआ

भेडा दी चोरी
चरवाहिआ दी चोरी
बदूका दी चोरी
सिपाहीआ दी चोरी

इह कहीआ चोरीआ ने दोस्तो !
इलजाम ने केहो जहे !
ते राजनीती दे हत्थ विच्च
इह जाम ने केहो जहे !

जो वेहडा सजाये जग दा
उस हुसन दी चोरी करो
जो काइदा सिखाये अदब दा
उस इश्क दी चोरी करो

दोस्तो !

(17 सितम्बर 1965)

रात का शिकवा
कि दिन जाने को था
मेरी दहलीज पार करके
मुट्ठी भर सितारे चुराकर ले गया

दिन का शिकवा
कि रात जाने को थी
मेरी दहलीज पार करके
मुट्ठी भर किरणें चुराकर ले गयी

होंठ चांदी के कटोर थे
मिसरी का एक टुकड़ा घोल कर
फिर रात मुसकरायी
और दिन हँस दिया
सितारा कोई कम नहीं
किरणें पूरी की पूरी थीं

भेड़ों की चोरी
चरवाहों की चोरी
बन्दूकों की चोरी
सिपाहियों की चोरी

यह कैसी चोरियाँ हैं दोस्तो
यह इलजाम कैसे हैं !
और राजनीति के हाथ में
यह जाम कैसे हैं !

जो दुनिया का आंगन सजाये
उस हुस्न की चोरी करो
जो अदब के कायदे सिखाये
उस इश्क की चोरी करो

जो इल्म बनाए जीउण न
उस इल्म दा चाए करो
जो हिकमत निठे इनसान दी
उस इल्म नूं चोरी करो

[illegible] दा दहलीज रख के
बाहुआं दा बूहा साहन के
[illegible] दौलत चुराओ
होठ चांनी द कौल न
[illegible] दा टोंग घोल क
[illegible] लाओ

[illegible] दौलतां न सारीआं
[illegible] चोरी करो
ता चोरीआं मुबारक
जे कदा लगाओ
तां कदा वी प्यारीआं

इक खत

चन्न सूरज दी दवात
कलम ने डोबा लिआ
लिखतम तमाम धरती
पढतम तमाम लोक

हुक्मरानां दोस्तो
[illegible], बदूकां ते [illegible]
[illegible] तो [illegible]
[illegible] लहो

जो जीने की रस्म चलाये
उस इल्म की चोरी करो
जो इन्सान की किस्मत लिखे
उस कलम की चोरी करो

दिल की दहलीज़ पार कर
बाहों के किवाड़ खोलकर
यह दौलत चुराओ
होठ चांदी के कटोरे हैं
मिसरी का टुकड़ा घोलकर
कोई तोहमत लगाओ!

ये सभी दौलतें हैं
अगर चोरी करो
तो सब चोरियां मुबारक!
अगर तोहमत लगाओ
तो सब तोहमतें प्यारी हैं।

एक खत

चांद सूरज दो दवातें
कलम ने डोबा लिया
लिखतम तमाम धरती
पढ़तम् तमाम लोग

हुक्मराना दोस्तो
गोलियां बन्दूकें और एटम
चलाने से पहले
इस खत को पढ़ लेना

जो रसम चलाये जीऊण दी
उस इलम दी चोरी करो
जो किसमत लिखे इनसान दी
उस कलम दी चोरी करो

दिल दी दहलीज टप्प के
वाहवा दा वूहा खोहल के
इह दौलत चुराओ
होठ चादी दे कौल ने
मिसरी दा टोटा घोल के
कोई ऊज लाओ

इह दौलता ने सारीआ
जे चोरी करो
ता चारीआ मुबारक
जे ऊजा लगाओ
ता ऊजा वी प्यारीआ

इक खत

धन सूरज दी दवात
कलम ने डोबा लिआ
लिखतम तमाम धरती
पढतम तमाम लोक

हुकमराना दोस्तो
गोलीआ, बदूका ते ऐटम
चलाण तो पहिला
इह खत पढ लवो

जो जीने की रस्म चलाये
उस इल्म की चोरी करो
जो इन्सान की किस्मत लिखे
उस कलम की चोरी करो

दिल की दहलीज़ पार कर
बाहों के किवाड़ खोलकर
यह दौलत चुराओ
होंठ चाँदी के कटोरे हैं
मिसरी का टुकड़ा घोलकर
कोई तोहमत लगाओ !

ये सभी दौलतें हैं
अगर चोरी करो
तो सब चोरियाँ मुबारक !
अगर तोहमत लगाओ
तो सब तोहमतें प्यारी हैं।

एक खत

चाँद सूरज दो दवातें
कलम ने डोबा लिया
लिखतम तमाम धरती
पढ़तम् तमाम लोग

हुक्मरानो दोस्तो
गोलियाँ, बन्दूकें और एटम
चलाने से पहले
इस खत को पढ़ लेना

साइंसदानो दोस्तो
गोलीआ, बदूका ते ऐटम
बनाण तो पहिला
इह खत पढ लवो

सितारिआ दे हरफ
ते चिरना दी बोली
जो पढनी नही अऊंदी
चिमे आशक-अदीब तो पढवा लवो
अपनो चिमे महबूब ता पढवा लवो
त हर इक मा दी इह मात बोली है
घडी बु बैठ जावो किसे वी था'ते
ते खत पढवा लवो किसे वी मा ता

ते फेर आवो मिलो
कि मुलका दी हद्द जित्थे है
इक हद्द मुलक दी
ते मेच के वेखो
इक हद्द इलम दी
इक हद्द इशक दी
ते फेर दस्सो कि किस दी हद्द कित्थे है !

चन सूरज दो दवाता
अज इक डोबा लवो
ते एस खत दी पहुंच देवो
ते दुनीआ दी सुख साद दे
दो अक्खर वी पा दिओ

तुहाडी—आपनी धरती
तुहाडा खत उडीकदी
बडा फिकर करदी पई।

साइंसदानो, दोस्तो
गोलियाँ, बन्दूकें और एटम
बनाने से पहले
इस खत को पढ़ लेना

सितारो के हरफ
और किरनो की बोली
जो पढनी नही आती
किसी आशिक—अदीब से पढवा लेना
अपनी किसी महबूब स पढवा लेना
और हर एक माँ की यह 'मात-बोली' है
तुम बैठ जाना किसी भी ठाव
और खत पढवा लेना किसी भी मा से

फिर आना और मिलना
कि मुल्क की हद जहाँ है
एक हद मुल्क की
और नाप कर देखो
एक हद इलम की
एक हद इश्क की
और फिर बताना कि किसकी हद कहाँ है

चाँद सूरज दो दवातें
हाथ मे एक कलम लो
इस खत का जवाब दो
और दुनिया की सुख-सार के
दो हरफ भी डाल दो

तुम्हारी-अपनी धरती
तुम्हारे खत की राह देखती
बहुत फिकर कर रही